हिन्दी दैनिक

लखनऊ जंक्शन

RNI NO.-UPHIN/2015/64743 Email-lkojunction@gmail.com

वर्ष: 11 अंक: 135 लखनऊ, सोमवार 05 जनवरी 2026 पृष्ठ: 04 मूल्य: 01 रूपये

संक्षिप्त समाचार

मंदिर में अराजक तत्वों ने तोड़ी शिव और राधा–कृष्ण की प्रतिमा, आक्रोशित ग्रामीणों ने जाम किया सड़क

एजेंसी

जौनपुर। उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले में शाहगंज कोतवाली क्षेत्र के बीबीगंज चौकी अंतर्गत गोड़िला गांव में स्थित राधा–कृष्ण मंदिर में शनिवार की रात अराजक तत्व ने मूर्ति विखंडित कर दिया। सुबह जब भक्त पूजा करने पहुंचे तो खंडित मूर्ति देख आक्रोशित हो उठे। ग्रामीणों ने मंदिर के बाहर सड़क जाम कर दिया। सूचना पर पहुंचे क्षेत्राधिकारी अजीत सिंह चौहान कोतवाली प्रभारी निरीक्षक के के सिंह के के समझाने बुझाने पर जाम आधे घंटे में समाप्त हो गया। फिलहाल पुलिस ने एक आरोपित को गिरफ्तार किया है। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार गोड़िला गांव के फाटक रेलवे क्रासिंग पर राधा–कृष्ण मंदिर है। जहां स्थापित भगवान शंकर और श्रीकृष्ण की मूर्ति को अराजक तत्वों ने क्षतिग्रस्त कर दिया।

काशी वॉलीबॉल चौंपियनशिप: पीएम मोदी ने किया वर्चुअली उद्घाटन

कहा– खेल के मैदान में जेन–जी को तिरंगा फहराते देख हमें गर्व होता है

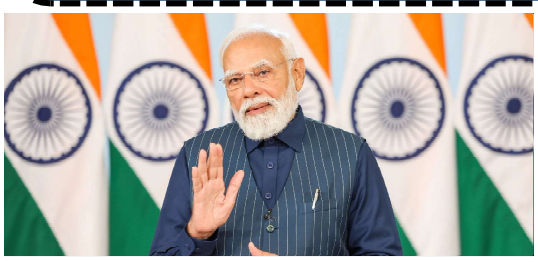

एजेंसी

वाराणसी। यह काशी के इतिहास में पहली बार है जब किसी राष्ट्रीय स्तर के चौंपियनशिप का आयोजन किया जा रहा है। डॉक्टर संपूर्णानंद स्पोर्ट्स स्टेडियम में इस ऐतिहासिक प्रतियोगिता का वर्चुअल उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने स्पोर्ट्स स्टेडियम से उपस्थित रहकर किया। यूपी वॉलीबॉल एसोसिएशन के अध्यक्ष और डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक भी इस मौके पर उपस्थित रहे। उद्घाटन के मौके पर प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि काशी के सांसद के नाते मेरी ओर से सभी खिलाड़ियों का स्वागत है। 72वीं सीनियर नेशनल वॉलीबॉल चौंपियनशिप में आप कड़ी मेहनत से पहुंचे हैं। काशी के मैदान में आपकी कड़ी परीक्षा होगी। आप सभी लोग एक भारत, श्रेष्ठ भारत की सुंदर तस्वीर प्रस्तुत करेंगे। बनारसी भाषा में कहा जाता है कि बनारस को जानना है तो बनारस आना होगा। यह खेल–प्रेमियों का शहर है, कुश्ती, नौका दौड़, मुक्केबाजी यहां मशहूर हैं। काशी ने कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी दिए हैं। उन्होंने कहा कि मुझे विश्वास है कि इस चौंपियनशिप के दौरान जोश हाई रहेगा। वॉलीबॉल साधारण खेल नहीं है, यह संतुलन का खेल है, संकल्प का खेल है। बॉल को हमेशा ऊपर ही उठाना होता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि मैं तो भारत की डेवलपमेंट स्टोरी और वॉलीबॉल को एक जैसा देखता हूं। टीम का को–ऑर्डिनेशन जरूरी होता है। टीम का हर सदस्य अपनी जिम्मेदारी निभाता है। देश के विकास में भी यही दिखाई पड़ता है। डिजिटल पेमेंट से लेकर हर क्षेत्र में ऐसी भावना दिखाई पड़ती है। जब देश विकास करता है तो यह आर्थिक मोर्चे तक सीमित नहीं रहता, बल्कि खेल के मैदान पर भी यही झलकता है। उत्तर प्रदेश में देश की धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक राजधानी काशी ने खेल जगत में नया इतिहास रच दिया। सिगरा स्थित नवनिर्मित डॉ. संपूर्णानंद स्पोर्ट्स स्टेडियम में 4 से 11 जनवरी तक आयोजित 72वीं सीनियर नेशनल वॉलीबॉल चौंपियनशिप उद्घाटन समारोह में मुख्यमंत्री योगी ने कहा आज खेल समय बर्बादी का नहीं बल्कि जीवन की सफलता का माध्यम है।इस अवसर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि 72वीं सीनियर नेशनल वॉलीबॉल चौंपियनशिप के शुभारंभ कार्यक्रम में सभी खिलाड़ियों का स्वागत है। उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री जी, यह आपकी अविनाशी काशी भव्य आयोजन के लिए तैयार है। सबसे पहले प्रधानमंत्री जी का हृदय से स्वागत करते हुए आभार व्यक्त किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले साढ़े ग्यारह वर्षों में पूरे भारत के समग्र विकास को सभी ने देखा है। भारत आधुनिकता के साथ नए संकल्पों के साथ विकसित भारत की ओर अग्रसर हो रहा है। आज सरकार की योजनाओं से जुड़कर गरीबी रेखा से ऊपर उठकर नया भारत हर कोई देख रहा है। खेलो इंडिया के माध्यम से खेल को लोगों ने नई दृष्टि से समझा है। आज खेल समय की बर्बादी नहीं, बल्कि जीवन की सफलता का माध्यम है। हर जनपद में विभिन्न खेलों के आयोजन निरंतर हो रहे हैं, जिससे खेल के आयाम बदल रहे हैं। गांव से लेकर शहर स्तर तक खेल की तमाम योजनाएं चल रही हैं और नई बन रही हैं। आज के इस पूरे आयोजन के पीछे प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा है। खेलों में आए बदलाव के पीछे प्रधानमंत्री जी का विजन है। उत्तर प्रदेश में पिछले आठ वर्षों में हर जनपद में स्टेडियम, ओपन जिम और खेलों को आगे बढ़ाने के प्रयास जारी हैं। आज हमारे खिलाड़ी ओलंपिक, कॉमनवेल्थ गेम्स और अन्य अंतरराष्ट्रीय खेलों में हिस्सा ले रहे हैं। उत्तर प्रदेश में काशी के सिगरा स्टेडियम में 72वीं सीनियर नेशनल

वॉलीबॉल चौंपियनशिप के उद्घाटन समारोह में रविवार को उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि मैदान में खेलने वाला खिलाड़ी हारता–जीतता तो होगा, लेकिन मैदान के बाहर वह फिर एक हो जाता है। पहले खेल मात्र औपचारिकता होता था, लेकिन आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अगुवाई में खेल नई ऊँचाइयों को छू रहा है। देश का हर खिलाड़ी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अपना अभिभावक समझता है। आज खिलाड़ी जब विदेश से खेलकर लौटता है या देश में रहता है, तब भी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी उनसे मिलकर उनका उत्साह बढ़ाते हैं। भारतीय क्रिकेट एक अलग मुकाम पर पहुँच गया है। वॉलीबॉल गाँव–घर का खेल है। उत्तर प्रदेश में 43 वर्षों बाद प्रदेश को यह गौरव प्राप्त हो रहा है। इस चौंपियनशिप में देश की कुल 58 टीमें हिस्सा ले रही हैं। महिला खिलाड़ी भी बढ़–चढ़कर हिस्सा ले रही हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की प्रेरणा से भारत का हर क्षेत्र बदल रहा है और खिलाड़ी और अधिक मेहनत कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश सरकार भी खिलाड़ियों को लगातार प्रोत्साहित कर रही है।

लखनऊ सहित प्रदेश के पांच मंडलों में लगेंगे बड़े रोजगार मेले, दिग्गज 100 कंपनियां लेंगी इंटरव्यू

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ रोजगार मेले का करेंगे शुभारंभ

लखनऊ ब्यूरो

लखनऊ। रोजगार और नौकरी से वंचित प्रदेश के युवाओं को रोजगार पाने का बढ़ा अवसर मिलने जा रहा है। 9 जनवरी से लखनऊ सहित पांच मंडलों में रोजगार की बहार बहेगी। प्रत्येक मंडलों में करीब 100 कंपनियों में 10 हजार से अधिक युवाओं को रोजगार से जोड़ने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ स्वंय रोजगार मेले का शुभारंभ करेंगे। उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन के निदेशक पुलकित खरे ने इस संबंध में आदेश जारी किया है। कौशल विकास विभाग के अधिकारियों ने बताया कि गोमतीनगर स्थित इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान परिसर में 9 जनवरी को मेगा रोजगार मेले का मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शुभारंभ करेंगे। 6 फरवरी तक प्रत्येक पांच मंडलों में प्रस्तावित मेगा रोजगार मेले में आस–पास के जिलों के युवाओं को स्थानीय स्तर के साथ ही देश व प्रदेश में रोजगार पाने का सुनहरा मौका मिलेगा। अलीगंज राजकीय आईटीआई के प्लेसमेंट अधिकारी एमए खान ने बताया कि आईटीआई, डिप्लोमा, इंजीनियरिंग के साथ– साथ हाईस्कूल, इंटरमीडिएट, स्नातक और परास्तक तक योग्यता रखने वाले युवाओं को उनकी कौशल क्षमता के आधार पर नौकरी मिलेगी। देश की नामी टाटा मोटर्स, मारुति सुजुकी, होंडा, बजाज, पेटीएम व अन्य नामी कंपनियों में करीब 30 हजार रुपये तक वेतन पर नौकरी मिलेगी। मुख्य विकास अधिकारी की निगरानी में होगी व्यवस्था कौशल विकास विभाग की ओर से जारी आदेश के अनुसार, रोजगार मेला के आयोजक, स्थल चयन, प्रतिभाग करने वाली नियोजक संस्थाओं एवं मेला के आयोजन पर व्यय की जाने वाली धनराशि व अन्य व्यवस्थाएं मुख्य विकास अधिकारी की निगरानी में होगी। रोजगार मेले को सफल बनाने में मंडलीय संयुक्त निदेशक प्रशिक्षण, राजकीय आईटीआई, पॉलीटेक्निक व अन्य शिक्षण संस्थानों से भी सहयोग मांगा गया है।

इन तारीखों पर इन शहरों में लगेंगे रोजगार मेले

9 जनवरी – लखनऊ, कानपुर, आयोध्या, बरेली

16 जनवरी– मुजफ्फरनगर मेरठ, सहारनपुर,अलीगढ़,मुरादाबाद

23 जनवरी– झांसी, चित्रकूट आगरा

30 जनवरी गोरखपुर,बस्ती देवी पाटन, आजमगढ़

6 फरवरी– वाराणसी, मिर्जापुर, प्रयागराज।

फ्रांस और लक्जमबर्ग के दौरे पर विदेश मंत्री जयशंकर, फ्रांसीसी राजदूत सम्मेलन को करेंगे संबोधित

दिल्ली ब्यूरो

नई दिल्ली। विदेश मंत्री एस जयशंकर रविवार (04 जनवरी) से 10 जनवरी तक फ्रांस और लक्जमबर्ग की आधिकारिक यात्रा पर रहेंगे। विदेश मंत्रालय के अनुसार जयशंकर पेरिस में फ्रांसीसी नेतृत्व से मुलाकात करेंगे और अपने समकक्ष जीन नोएल बैरोट के साथ बातचीत करेंगे। फ्रांसीसी राजदूत सम्मेलन को करेंगे संबोधित दोनों मंत्री भारत–फ्रांस रणनीतिक साझेदारी के तहत हुई प्रगति और वैश्विक महत्व के मुद्दों पर चर्चा करेंगे। विदेश मंत्रालय के अनुसार जयशंकर विशिष्ट अतिथि के रूप में फ्रांसीसी राजदूत सम्मेलन के 31वें संस्करण को भी संबोधित करेंगे।

पीएम मोदी की यात्रा के बाद अब जयशंकर का दौरा दरअसल, विदेश मंत्री एस. जयशंकर की फ्रांस यात्रा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की फरवरी में हुई फ्रांस यात्रा के कुछ महीनों बाद हुई है, जिसके दौरान उन्होंने फ्रांसीसी इमैनुएल मैक्रों के साथ एआई एक्शन समिट की सह–अध्यक्षता की और उनके साथ द्विपक्षीय वार्ता की। लक्जमबर्ग का दौरा भी करेंगे विदेश मंत्री फ्रांस की यात्रा समाप्त करने के बाद विदेश मंत्री लक्जमबर्ग का दौरा करेंगे, जहां वे लक्जमबर्ग के उप प्रधानमंत्री और उनके समकक्ष जेवियर बेटेल के साथ–साथ वरिष्ठ नेतृत्व के साथ चर्चा करेंगे। वे लक्जमबर्ग में भारतीय समुदाय के सदस्यों से भी बातचीत करेंगे। बांग्लादेश और श्रीलंका का किया था हालिया दौरा बता दें कि इससे पहले जयशंकर बांग्लादेश भी गए थे, जहां उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया के अंतिम संस्कार में हिस्सा लिया था, जिनका पिछले महीने 80 वर्ष की आयु में निधन हो गया था। शेख हसीना के शासन को सत्ता से बेदखल करने वाले 2024 के विद्रोह के बाद से भारत और बांग्लादेश के बीच तनावपूर्ण संबंधों के बीच ढाका की जयशंकर की यात्रा का विशेष महत्व था। बांग्लादेश से पहले जयशंकर ने श्रीलंका का दौरा किया और कोलंबो में प्रधानमंत्री हरिनी अमरसूर्या से मुलाकात की, जहां उन्होंने चक्रवात दित्वाह के बाद द्वीप राष्ट्र के पुनर्निर्माण प्रयासों में भारत की सहायता करने की प्रतिबद्धता की पुष्टि की, जिसमें कई लोगों की जान चली गई थी।

पुलिस मुठभेड़ में किशोरी के साथ गैंगरेप करने वाले तीन आरोपी गिरफ्तार

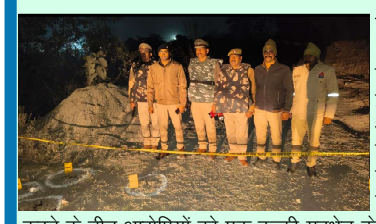

एजेंसी

सोनभद्र। उत्तर प्रदेश में सानभद्र के ओबरा थाना क्षेत्र में पुलिस ने एक किशोरी को पहाड़ी पर ले जाकर गैंगरेप करने के तीन आरोपियों को एक हल्की मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस द्वारा की गई फायरिंग में एक आरोपी के पैर में गोली लगी है जिसे इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस क्षेत्राधिकारी अमित कुमार ने रविवार को बताया की 2 जनवरी की शाम थाना ओबरा पर आवेदिका द्वारा लिखित तहरीर दी गई कि उसकी पुत्री उम्र करीब 17 वर्ष मजदूरी करने के उद्देश्य से ग्राम भलुआ टोला में किराये के कमरे में रहती थी। उसकी पुत्री के साथ कार्य करने वाला राजगीर मिस्त्री पप्पू उर्फ बिन्दू यादव पुत्र रवि यादव निवासी कनहरा थाना ओबरा जनपद सोनभद्र ने अपने अन्य दो साथियों के साथ दिनांक 30 दिसंबर को उसकी पुत्री को भलुआ टोला के पूरब स्थित पहाड़ी पर ले जाकर जबरन दुष्कर्म किया गया। मामले की जानकारी होते ही पुलिस टीम ने प्रकरण की संवेदनशीलता को दृष्टिगत रखते हुए मिशन शक्ति केन्द्र थाना ओबरा के माध्यम से पीड़िता एवं उसकी माता से तत्काल संपर्क स्थापित कर संवेदनशील वार्ता, काउंसलिंग एवं विश्वास बहाली की गई। ओबरा थाना पर तहरीर के आधार पर एससी एसटी व पास्को एक्ट के तहत अभियोग पंजीकृत कर आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस की दो टीमें गठित किया गया।

खालिस्तानी आतंकी अर्श डल्ला पर शिकंजा, दो शूटर्स के खिलाफ चार्जशीट की दायर

दिल्ली ब्यूरो

नई दिल्ली। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने रविवार को खालिस्तानी आतंकवादी अर्श डल्ला से जुड़े 2024 के नीमराना होटल फायरिंग मामले में शामिल दो मुख्य शूटरों के खिलाफ चार्जशीट (आरोप पत्र) दायर की है। गिरफ्तार आरोपी पुनीत और नरिंदर लल्ली के नाम शनिवार को राजस्थान के जयपुर की एक अदालत में दायर चार्जशीट में भारतीय न्याय संहिता, आर्म्स एक्ट और गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम के तहत विभिन्न अपराधों के लिए शामिल किए गए हैं। अब तक कुल नौ आरोपियों के खिलाफ चार्जशीट दायर छप। की ओर से जारी एक बयान में आरोप लगाया गया है कि पंजाब के इन शूटरों ने ही असल में फायरिंग की थी, और वे नीमराना (राजस्थान) के हाईवे किंग होटल के मालिकों को धमकी देने और उनसे जबरन वसूली मांगने में भी शामिल थे। इसके साथ, इस मामले में अब तक कुल नौ आरोपियों के खिलाफ चार्जशीट दायर की जा चुकी है। पुनीत और नरिंदर ने दिया था फायरिंग को अंजाम बयान में कहा गया है कि होटल पर हमला सितंबर 2024 में नामित आतंकवादी अर्शदीप सिंह उर्फ अर्श डल्ला और बंबिया गैंग के नेतृत्व वाले खालिस्तान टाइगर फोर्स (KTF) के आतंकवादी–गैंगस्टर सिंडिकेट की तरफ से किया गया था। एजेंसी ने आरोप लगाया कि गैंग के सदस्य दिनेश गांधी और सौरभ कटारिया हमले की योजना बनाने के लिए जिम्मेदार थे, जिसे पुनीत और नरिंदर ने अंजाम दिया था, जिन्हें डल्ला और गांधी का संरक्षण प्राप्त था। एनआईए की जांच में भूमिका का खुलासा छप। ने अपनी जांच के दौरान पुनीत और नरिंदर की कथित भूमिका का खुलासा किया, जिन्होंने हमले में प्रतिबंधित हथियारों का इस्तेमाल किया था और सिंडिकेट की ओर से धमकी भी दी थी। जांच एजेंसी ने आरोप लगाया कि यह भी पाया गया कि ये दोनों ज़ज्थे के उद्देश्यों को बढ़ावा देने के लिए सिंडिकेट से लगातार फंड, आश्रय और हथियार प्राप्त कर रहे थे।

वेनेजुएला के तेल भंडार पर अमेरिकी नियंत्रण से मिल सकता है, भारत का अटका हुआ बकाया

दिल्ली ब्यूरो

नयी दिल्ली। विश्लेषकों और उद्योग सूत्रों के अनुसार, वेनेजुएला के तेल क्षेत्र पर अमेरिकी नियंत्रण अथवा उसके पुनर्गठन से भारत को प्रत्यक्ष लाभ मिल सकता है। विश्लेषकों ने बताया कि इस घटनाक्रम के चलते काफी समय से लंबित भारत के लगभग एक अरब अमेरिकी डॉलर के बकाये की वसूली हो सकती है और प्रतिबंधों से प्रभावित वेनेजुएला में भारतीय संस्थाओं द्वारा संचालित तेल क्षेत्रों से कच्चे तेल का उत्पादन भी बढ़ सकता है। उल्लेखनीय है कि भारत एक समय वेनेजुएला के भारी कच्चे तेल का प्रमुख आयातक था और अपने चरम काल में प्रतिदिन चार लाख बैरल से अधिक का आयात करता था। हालांकि, 2020 में अमेरिकी प्रतिबंधों और अनुपालन जोखिमों के कारण यह आयात बाधित हो गया था। भारत की प्रमुख विदेश तेल अन्वेषण एवं उत्पादन कंपनी ओएनजीसी विदेश लिमिटेड (ओवीएल) पूर्वी वेनेजुएला के सैन क्रिस्टोबल तेल क्षेत्र का संयुक्त संचालन करती है। अमेरिकी प्रतिबंधों के कारण आवश्यक तकनीक, उपकरण और सेवाओं तक पहुंच बाधित होने से वहां उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा और व्यावसायिक रूप से उपयोगी भंडार लगभग फंस गए। वेनेजुएला सरकार ने इस परियोजना में ओवीएल की 40 प्रतिशत हिस्सेदारी पर 2014 तक देय 53.6 करोड़ अमेरिकी डॉलर का लाभांश अभी तक नहीं चुकाया है। इसके बाद की अवधि के लिए भी लगभग समान राशि बकाया है, किंतु ऑडिट की अनुमति न मिलने के कारण इन दावों का निपटान लंबित है। विश्लेषकों के अनुसार, यदि अमेरिका वहां के तेल भंडार को अपनी निगरानी में लेता है, तो प्रतिबंधों में ढील दी जा सकती है। इसके बाद ओवीएल गुजरात और अन्य क्षेत्रों से रिग एवं अन्य उपकरण भेजकर उत्पादन में वृद्धि कर सकती है। इस समय यह उत्पादन घटकर मात्र 5,000 से 10,000 बैरल प्रतिदिन रह गया है। अधिकारियों का अनुमान है कि यदि उन्नत उपकरण और अतिरिक्त तेल कुओं का उपयोग किया जाए, तो उत्पादन बढ़कर 80,000 से 1,00,000 बैरल प्रतिदिन हो सकता है। इसके लिए आवश्यक रिग ओएनजीसी के पास पहले से उपलब्ध हैं। अमेरिकी नियंत्रण का अर्थ यह भी है कि वैश्विक बाजार में वेनेजुएला से निर्यात शीघ्र बहाल हो सकता है, जिससे ओवीएल को अपने पुराने बकाये की वसूली में सहायता मिलेगी। ओवीएल ने पूर्व में अमेरिकी वित्त मंत्रालय के विदेशी संपत्ति नियंत्रण कार्यालय (ओएफएसी) से विशेष लाइसेंस के तहत प्रतिबंधों में छूट की मांग की थी, जैसा कि शेवरॉन को प्रदान किया गया था।

मथुरा: 7 दिवसीय प्रवास पर कान्हा की नगरी पहुंचे संघ प्रमुख मोहन भागवत, आगामी एजेंडों पर होगा महामंथन

एजेंसी

मथुरा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघचालक मोहन भागवत रविवार को धर्मनगरी मथुरा पहुंचे। उनके आगमन को लेकर प्रशासन और पुलिस विभाग द्वारा सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। मथुरा रेलवे स्टेशन पर उतरने के बाद संघ प्रमुख सीधे वृंदावन स्थित केशव धाम के लिए रवाना हुए। वे यहां चार जनवरी से 10 जनवरी तक सात दिवसीय प्रवास पर रहेंगे।

मोहन भागवत का यह दौरा बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है। वे वृंदावन के केशव धाम में आयोजित होने वाली संघ की 7 दिवसीय अखिल भारतीय कार्यकारिणी बैठक की अध्यक्षता करेंगे। इस उच्च स्तरीय बैठक में संघ के सह–सरकार्यवाह सहित देश भर के लगभग 50 वरिष्ठ पदाधिकारी शामिल हो रहे हैं। सूत्रों के अनुसार, इस बैठक में संघ के विभिन्न प्रकल्पों की वर्तमान स्थिति की समीक्षा की जाएगी। साथ ही, आगामी वर्ष के लिए संगठन के विस्तार और सामाजिक समरसता जैसे महत्वपूर्ण एजेंडों पर गहन मंथन होगा। बैठक में संगठन की कार्यप्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाने पर भी चर्चा की जाएगी। सात दिनों के प्रवास के दौरान मोहन भागवत केवल संगठनात्मक बैठकों तक ही सीमित नहीं रहेंगे। वे वृंदावन में अक्षयपात्र संस्था द्वारा आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। इसके अतिरिक्त, वे वृंदावन स्थित सुदामा कुटी के शताब्दी समारोह में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराएंगे, जिसे लेकर संत समाज में भारी उत्साह है। संघ प्रमुख के इस प्रवास के दौरान मथुरा में बड़े राजनीतिक जमावड़े की भी संभावना है। कयास लगाए जा रहे हैं कि देश के गृह मंत्री अमित शाह और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी वृंदावन पहुंचकर मोहन भागवत से मुलाकात कर सकते हैं। हालांकि, इन मुलाकातों को लेकर अभी तक कोई आधिकारिक प्रोटोकॉल जारी नहीं हुआ है, लेकिन प्रशासनिक स्तर पर तैयारियां मुस्तैद हैं। मोहन भागवत की सुरक्षा को देखते हुए मथुरा–वृंदावन मार्ग और केशव धाम के आसपास भारी पुलिस बल तैनात किया गया है। एलआईयू और खुफिया एजेंसियां भी सक्रिय हैं। केशव धाम परिसर को पूरी तरह से छावनी में तब्दील कर दिया गया है ताकि सात दिवसीय बैठक शांतिपूर्वक संपन्न हो सके।

संपादकीय

कांग्रेस ने शशि थरूर को दोराहे पर लाकर खड़ा कर दिया

पिछले 45 वर्षों से वाम दलों का गढ़ माने जाते त्रिवेंद्रम के नगर निकाय चुनावों में भाजपा की चौंकाने वाली जीत ने जहां भाजपा के प्रवेश की भूमि तैयार कर दी है, वहीं पार्टी की इस जीत ने कांग्रेस पार्टी के असंतुष्ट नेता शशि थरूर की हाल की बेचौन कोशिशों के कारण को दर्शाया है। शायद उनको (थरूर) हवा का रुख बदलने का आभास हो चुका था चूंकि लोकसभा चुनाव (2024) में त्रिवेंद्रम की सीट पर वह बेहद मामूली फर्क से जीते थे। इससे पूर्व लगातार 3 चुनावों में बड़ी जीत दर्ज करने के बाद गत वर्ष वह भाजपा के उम्मीदवार राजीव चंद्रशेखरन को मात्र 12,600 मतों से ही हरा सके थे। संभवतः शहर की सीमाओं के बाहर तटीय इलाकों में रहने वाले आर्थिक रूप से बड़े कमजोर वर्ग के मछुआरों के एकजुट होकर शशि थरूर के पक्ष में मतदान किए जाने की वजह से ही वह जीत पाए थे। शहर के 101 वार्डों में से भाजपा ने 50 पर जीत प्राप्त की, जोकि पूर्ण बहुमत से केवल 1 सीट कम है। हालांकि भाजपा की यह जीत शशि थरूर के लिए खुशी की वजह बनने की संभावना कम ही है। उलटे आने वाले दिनों में स्थानीय (लोकल) सियासी समीकरणों में वह खुद को हाशिए पर पा सकते हैं। निःसंदेह शशि थरूर कांग्रेस पार्टी के एक पुराने, अनुभवी, मृदुभाषी, निष्ठावान व कर्मठ नेता हैं, परन्तु जिस पार्टी ने उनके राजनीतिक करियर को गढ़ा और संवारा, उसी पार्टी के विरुद्ध उनके तथाकथित बयानों, हालिया महीनों के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की खुले रूप में प्रशंसा के पुल बांधना और तत्पश्चात रूस के राष्ट्रपति पुतिन के सम्मान में राष्ट्रपति भवन में आयोजित भोज में शामिल होने के कारण थरूर को अपनी ही पार्टी में एक तरह से अविश्वसनीय बना डाला है। 'आप्रेशन सिंदूर' के बाद के घटनाक्रमों में सरकार के अंतरराष्ट्रीय जनसंपर्क अभियान के अधीन जब शशि थरूर को एक प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व सौंपते हुए विदेशों में भेजा गया, तो उस वक्त कांग्रेस पार्टी को सार्वजनिक रूप से असहज होना पड़ा था। अब जबकि उनके (थरूर) अपने निर्वाचन क्षेत्र में भाजपा का सितारा चमकने के पूरे आध ाार बने हुए हैं, तो ऐसे वक्त में शशि थरूर पूर्ण आशा कर सकते हैं कि गत कई महीनों में भारतीय जनता पार्टी के साथ मेल–मिलाप बढ़ाने का उन्हें कोई सियासी फायदा मिलेगा? त्रिवेंद्रम में अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए शशि थरूर को राजीव चंद्रशेखरन जैसी मजबूत शख्सियत का मुकाबला करना पड़ेगा। नगर निकाय चुनावों में पार्टी के हैरतअंगेज प्रदर्शन को भाजपा में चंद्रशेखरन की एक बड़ी उपलब्धि के रूप में देखा जा रहा है। त्रिवेंद्रम में बढ़ती हुई वाम–विरोधी लहर व माहौल का सामाजिक लाभ कांग्रेस को ही मिलना था लेकिन थरूर के अपनी ही पार्टी के खिलाफ खुले विद्रोह ने कांग्रेस पार्टी को नुकसान ही पहुंचाया है। कांग्रेस वहां तीसरे स्थान पर रही, जबकि वाम दलों ने मुख्य विपक्षी दल की भूमिका बनाए रखी। राजीव चंद्रशेखरन पिछले कुछ वर्षों से इस संसदीय क्षेत्र को साध रहे हैं, ताकि 2029 के लोकसभा चुनाव में भाजपा का टिकट प्राप्त कर सकें। देखा जाए तो चंद्रशेखरन के पास साधनों की कोई कमी नहीं है, जबकि शशि थरूर के पास बड़ी पूंजी भाषाई ज्ञान तथा वाकपटुता भर है। देखने वाली दिलचस्प बात यह होगी कि क्या थरूर भाजपा का टिकट पाने में सफल होते हैं या उसकी आंतरिक राजनीति का शिकार हो जाते हैं। सही मायनों में थरूर को कांग्रेस पार्टी ने एक दोराहे पर लाकर खड़ा कर दिया है। 2026 की शुरुआत में केरल में चुनाव होंगे, जब पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु व असम में भी चुनाव होने हैं। केरल में जहां किसी समय शशि थरूर को कांग्रेस की एक बड़ी ताकत माना जाता था, वहीं अब स्थानीय चुनावों ने सिद्ध कर दिया है कि राज्य में अब उनकी प्रासंगिकता पहले जैसी नहीं रही। कांग्रेस पार्टी ने थरूर के लिए व्यावहारिक रूप से अपने दरवाजे बंद कर दिए हैं और यही बात उनके (थरूर) सामने एक भारी दुविधा खड़ी कर रही है। अगर थरूर कांग्रेस के लिए हितकारी साबित नहीं हो सकते, तो क्या भारतीय जनता पार्टी व संघ के लिए उपयोगी हो पाएंगे? स्पष्ट नजर आता है कि कांग्रेस को अधिकाधिक असहज करने के लक्ष्य से ही भाजपा गत कई महीनों से थरूर का फायदा उठा रही है। थरूर के हरेक बयान के लेख से पार्टी में खलबली मचती रही है। कांग्रेस पार्टी की मौजूदा राजनीतिक परिस्थितियों में अब कांग्रेस की सबसे बेहतर रणनीति यही है कि वह थरूर को हर दृष्टि से नजरअंदाज करे, जिसके पीछे थरूर से कड़वे अनुभव हैं। राजनीति के ऐसे भंवर से बाहर निकलने के लिए थरूर के पास केवल एक ही मांग है– खुद को पार्टी (कांग्रेस) से निष्कासित करवाने की कोशिश करना ताकि थरूर की लोकसभा सीट सुरक्षित रह सके। अगर उनको पार्टी से निकाला जाता है तो वह निर्दलीय सांसद बन जाएंगे, लेकिन अगर वह स्वयं इस्तीफा देते हैं तो उनकी सीट चली जाएगी। फिलहाल कांग्रेस तो उनके उकसावे में आकर उनको निष्कासित नहीं करना चाहती। अब देखना यह है कि क्या भाजपा त्रिवेंद्रम में हालात को परखने हेतु थरूर को इस्तीफा देने के लिए प्रेरित करती है तथा लोकसभा उपचुनाव करवाने की दिशा में अपने कदम बढ़ाती है?

राशिफल

मेष :– व्यापार में विकास के लिए आज का दिन लाभकारी रहेगा। धन के लेनदेन में सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। घर में सुख–शांति का वातावरण बना रहेगा।

वृषभ :– मन को स्थिर रखने की सलाह गणेशजी देते हैं, क्योंकि अर्निणय की मनोदशा से अवसर गवां सकते हैं। प्रवास का आयोजन टाल दें। नए कार्य प्रारंभ न करें।

मिथुन :– लक्ष्मीजी की कृपा से दिन लाभदायी होगा। उत्तम भोजन, सुंदर वस्त्र व अपनों के साथ से दिन आनंददायी होगा। धन अधिक व्यय न करें।

कर्क :– कोई भी महत्त्वपूर्ण निर्णय न लें। संबंधियों से मनमुटाव हो सकता है। वाणी पर संयम रखें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मानहानि एवं धनहानि से बचें।

सिंह :– आज का दिन लाभदायी है। मित्रों से लाभ और पर्यटन की संभावना है। हाथ आया अवसर जा सकता है, इसलिए निर्णय टाल दें। व्यापार एवं आर्थिक लाभ के योग हैं।

कन्या :– आज दिन शुभ है। नए कार्य संपन्न होंगे। व्यापारी व नौकरीपेशा लोगों के लिए समय अच्छा है। व्यापार में लाभ व नौकरी में पदोन्नति के योग हैं। पिता से लाभ होगा।

तुला :– व्यावसाय में लाभ की संभावना है ऐसा गणेशजी कहते हैं। नौकरी व व्यापार में सहकर्मियों से सहयोग नहीं मिलेगा। लंबी यात्रा का आयोजन हो सकता है। अस्वस्थ रहेंगे।

वृश्चिक :– आज का दिन शुभ और फलदायी होगा। महत्त्वपूर्ण निर्णय न लेने की सलाह है। यात्रा के योग हैं। लेखनकार्य के लिए अच्छा दिन है। महिला के साथ विवाद में न उतरें।

धनु :– आज का दिन आनंदपूर्वक बीतेगा। सहवास का आनंद मिलेगा। प्रवास, पर्यटन होगा। लेखनकार्य के दिन अनुकूल है। साझेदारी से लाभ होगा।

मकर :–गणेशजी कहते हैं कि आप में उत्साह व स्फूर्ति की कमी होगी। परिजनों के साथ विवाद न करें। अस्वस्थ महसूस करेंगे। नौकरी में चिंता रहेगी। धन व कीर्ति की हानि न हो ध्यान रखें।

कुंभ :– आप की वाणी व विचारों में शीघ्र परिवर्तन होगा। बौद्धिक चर्चा में शामिल होंगे। आकस्मिक खर्च की आशंका है। पाचन न होने जैसी बीमारियों से परेशान होंगे।

मीन :– आज शांति व सावधानीपूर्वक रूप से रहने की गणेशजी की सलाह है। नए कार्यों में असफलता के योग हैं। क्रोध पर संयम रखें। सरकार विरोधी प्रवृत्तियों से दूर रहें।

विश्व मंच पर भारत : संकट से अवसर तक

– डॉ. प्रियंका सौरभ

वैश्विक मंच पर, 2025 में तेजी से बदलती परिस्थितियों और अनिश्चितताओं ने भारत की विदेश नीति के आकार को प्रभावित किया। इस वर्ष विश्व भू–राजनीतिक परिदृश्य में कई आश्चर्यजनक घटनाओं ने भारत की कूटनीतिक संतुलन को चुनौती दी। लेकिन भारत के ष्ट्रम्प 2.0ष युग ने, जो संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ सहयोग की स्थिति को चुनौती देता था, देश की रणनीतिक स्वायत्तता को पुनः दिशा देने की शुरुआत की। व्यापार पर अत्यधिक शुल्क की प्रवृत्तियाँ, अधिक कठोर भ्–1ठ वीजा नीतियाँ, और अमेरिका द्वारा अप्रत्याशित विदेश नीति हस्तक्षेप, सभी ने भारत–अमेरिका संबंधों में विश्वास को प्रभावित किया। भारत की ष्पड़ोसी पहलेष नीति को भी पड़ोसी देशों में राजनीतिक अस्थिरता ने चुनौती दी। नेपाल और बांग्लादेश में युवाओं के बीच राजनीतिक सक्रियता और विरोध ने भारत के प्रति उनकी असंतोष को बढ़ाया और भारत के मिशनों और नागरिकों की सुरक्षा के संदर्भ में भारत को खतरे का सामना करना पड़ा। इस वर्ष, पाकिस्तान के साथ तनाव गहरा गया जब आतंकवादी हमला हुआ। पहलगाम आतंकवादी घटना और उसके बाद चार दिवसीय सैन्य प्रतिक्रिया ने पुष्टि की कि पाकिस्तान–भारत संबंधों में पुरानी समस्याएँ अभी भी मौजूद हैं। भारत को यूक्रेन–रूस ऊर्जा और सामग्री संघर्षों के कारण भी कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ा। रूस के साथ ऊर्जा सहयोग के लिए भारतीय कंपनियों पर यूरोपीय संघ और यूनाइटेड किंगडम द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों ने भारत की ऊर्जा सुरक्षा पर नए सिरे से चिंताएँ उठाईं। चीन की रणनीति भी दोहरी थी; जबकि सीमा तनाव कुछ हद तक कम हुआ, चीन का पाकिस्तान के साथ सैन्य सहयोग और महत्वपूर्ण खनिजों पर व्यापार प्रतिबंधों ने भारत के विश्वास को कम कर दिया। फिर भी, इन्हीं कठिनाइयों के बावजूद, भारत 2026 में विभिन्न अवसर देख सकता है। अमेरिका के साथ संबंधों में तनाव ने यूरोप के साथ द्विपक्षीय आर्थिक और तकनीकी सहयोग को बढ़ावा देने के लिए नए अवसर पैदा किए हैं। भारत और यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ के बीच व्यापार और आर्थिक साझेदारी समझौता (ज्म्च्।) इसकी शुरुआत है। इसके अलावा, भारत डिजिटल प्रौद्योगिकी और एआई में वैश्विक नेतृत्व बनाने का भी लक्ष्य रख सकता है। 2026 का वैश्विक एआई शिखर सम्मेलन भारत को डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे और एआई शासन के लिए नैतिक मानकों को स्थापित करने के लिए एक मंच के रूप में सेवा करने का अवसर देगा, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) शासन में सर्वोत्तम प्रथाओं को स्थापित करने का अवसर देगा। यह न केवल प्रौद्योगिकी नेतृत्व के अवसर का मौका है बल्कि भारत के लिए वैश्विक दक्षिण में राज्यों के बीच नेताओं में भारत की स्थिति को मजबूत करने का एक मजबूत मामला बनाने का भी अवसर है। चीन के साथ ऐसी कूटनीतिक समन्वय को भी अस्थायी रूप से विस्तारित किया जा सकता है। यदि सीमा पर जोखिम से सुरक्षित और भारत के रणनीतिक हितों की रक्षा की जाती है, तो खुले वीजा शासन, तीर्थयात्राओं की वापसी ने व्यापार और सांस्कृतिक संपर्कों को अधिक सामान्य बनाने का मार्ग भी प्रशस्त किया है। कैलाश–मानसरोवर तीर्थयात्रा की पुनः शुरुआत कम से कम इस संदर्भ में कुछ हद तक सकारात्मक कदम है। ईरान–रूस व्यापारिक साझेदार के रूप में भारत की नई भूमिका संस्थागत उत्तर–दक्षिण व्यापार गलियारे (ष्छैज्ब्) के साथ, ईरान और रूस के बीच एक व्यापार गलियारा, भारत को लाभान्वित करेगा क्योंकि यह पारंपरिक समुद्री मार्गों से दूर एक मार्ग प्रदान करेगा और मध्य पूर्व के दौरान व्यापार में कोई व्यवधान नहीं होगा। श्रीलंका, मालदीव और भूटान द्वारा निवेश सहित आर्थिक और बुनियादी ढांचे पर पड़ोसी देशों के साथ सहयोग, क्षेत्र में विश्वास बनाने और स्थिरता लाने में मदद करता है। लेकिन ऐसे अवसरों के साथ चुनौतियाँ भी आती हैं। यूरोप या चीन के साथ संबंधों को सुधारने के प्रयास अमेरिका से आक्रामक नीतियों या संभावित द्वितीयक प्रतिबंधों को आमंत्रित कर सकते हैं। पड़ोसी देशों में निवेश को स्थानीय विरोध और राजनीतिक असंतोष के रूप में देखा जा सकता है, और भारत की छवि को नुकसान पहुंचा सकता है। वैश्विक दक्षिण में नेतृत्व की अपेक्षाएँ, चाहे वह एआई में हो या जलवायु परिवर्तन में, भारत के वित्त पर दबाव डाल सकती हैं। यह चीन के साथ सीमा पर रणनीतिक संतुलन को भी कमजोर कर सकता है; निगरानी में विफलता या बहुत देर से कार्रवाई करने से चीन को दक्षिण एशिया में अपनी उपस्थिति का विस्तार करने का मौका मिलेगा। हमें भारत की विदेश नीति के शासक मंत्र के रूप में ष्परम्मत, पुनर्निर्माण और संतुलनष का मंत्र होना चाहिए। इस उद्देश्य के लिए, यूरोपीय संघ व्यापार समझौतों और पारस्परिक तकनीकी सहयोग की ओर तेजी से तेजी की आवश्यकता है, जबकि व्यापार को संतुलित करते हुए घरेलू सुरक्षा संरचनाओं जैसे सीमा नियंत्रण और बाहरी अस्थिरता (विशेष रूप से पड़ोसी देशों के साथ) की स्थिरता को मजबूत करना। भारत को अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को संतुलित करना चाहिए, यह तथ्य कि ष्दुनिया एक परिवार हैष केवल एक नारा नहीं होना चाहिए – यह वास्तविक कूटनीतिक रणनीति और वैश्विक नेतृत्व का एक उपकरण होना चाहिए। वैश्विक राजनीति में होने वाली घटनाएँ पहले से कहीं अधिक अप्रत्याशित हैं। अमेरिका के अनिश्चित निर्णय, यूरोप में आर्थिक और तकनीकी अवसर, चीन और पाकिस्तान द्वारा रणनीतिक कदम, और रूस–यूक्रेन संकट और आसपास के देशों में राजनीतिक अस्थिरता भारत के लिए चुनौतियाँ और अवसर दोनों पैदा करते हैं। ऐसे समय में, भारत की कूटनीति बहुआयामी होनी चाहिए। इसकी कूटनीति में न केवल व्यापार और सुरक्षा शामिल होनी चाहिए, बल्कि प्रौद्योगिकी, आर्थिक, सांस्कृतिक, साथ ही रणनीतिक आयाम भी शामिल होने चाहिए। भारत को अब यह महसूस करना होगा कि वैश्विक नेतृत्व केवल शक्ति या आर्थिक संसाधनों पर आधारित नहीं है, बल्कि वैचारिक नेतृत्व और नैतिक नेतृत्व पर भी आधारित है। भारत एआई, डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे, शिक्षा और जलवायु जैसे क्षेत्रों में वैश्विक मानकों को स्थापित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। एक अधिक एकीकृत दृष्टिकोण से, भारत वैश्विक दक्षिण और विकसित विश्व राष्ट्रों के बीच अपनी कनेक्टिविटी स्थिति में सुधार कर सकता है। यह भारत के दीर्घकालिक हित में भी है कि वह निकटवर्ती देशों के साथ स्थिर और विश्वसनीय संबंध रखे। आर्थिक सहायता, बुनियादी ढांचे के विकास और उच्च–स्तरीय कूटनीतिक संबंधों के साथ, भारत को क्षेत्र में नेतृत्व करने का अवसर दिया गया है। यह न केवल एक आर्थिक या रणनीतिक अवसर है, बल्कि यह एक राजनीतिक और सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण अवसर भी है। पड़ोसी देशों की राजनीतिक अस्थिरता के मोर्चे पर जोखिम को कम करने के लिए, भारत को संवेदनशीलता और विवेक के साथ कार्य करने की आवश्यकता है। रूस–यूक्रेन संकट के संदर्भ में और चीन से रणनीतिक दबाव से, भारत ने अपनी ऊर्जा और अन्य सुरक्षा हितों के बीच समझौता किया है। भारत के पास क्षेत्रीय सहयोग और आर्थिक संबंधों के साथ, ष्छैज्ब् जैसी परियोजनाओं के माध्यम से पुराने व्यापार मार्गों से खुद को अलग करने और मध्य एशिया और यूरोप के साथ अपने व्यापारिक संबंधों को मजबूत करने की क्षमता है। और ये कदम केवल बहुपक्षीय कूटनीति में भारत की प्रोफ़ाइल को मजबूत करेंगे और वैश्विक राजनीति में इसकी स्वतंत्रता को मजबूत करेंगे। और भारत को यह सुनिश्चित करना होगा कि भविष्य की ओर देखते समय उसकी विदेश नीति केवल ष्अवसर का लाभ उठानेष के बारे में नहीं है, बल्कि क्षेत्रीय और वैश्विक स्थिरता को मजबूत करने के बारे में है। यह स्थिरता न केवल राजनीति और अर्थव्यवस्था के संदर्भ में स्पष्ट होनी चाहिए, बल्कि प्रौद्योगिकियों, संस्कृतियों और पर्यावरण में भी होनी चाहिए। वैश्विक समुदाय के भीतर एक नेता के रूप में, एआई, जलवायु नीति, ऊर्जा सुरक्षा और डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे में भारत की भागीदारी अत्यधिक सम्मान और नेतृत्व की होगी। इसलिए 2026 तक भारत की विदेश नीति का केंद्रीय आधार ष्संतुलन, अवसर और स्वायत्तताष होना चाहिए। इस तेजी से बदलती दुनिया और अप्रत्याशित घटनाओं में, यह न केवल सुरक्षा और विकास की गारंटी देगा बल्कि भारत को एक वैश्विक नेता बनने में सक्षम बनाएगा। भारत को अन्य देशों के साथ वास्तविक और विश्वास निर्माण संबंध विकसित करने चाहिए, उनके व्यापार और तकनीकी सहयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए और खुद को विश्व मंच पर एक नैतिक और वैचारिक शक्ति के रूप में स्थापित करना चाहिए। ऐसा करके, भारत न केवल अपने हितों को सुरक्षित करेगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए दुनिया भर में शांति और समृद्धि में भी योगदान देगा। संक्षेप मेंरू यह 2025 में भारत की विदेश नीति के सामने आने वाली चुनौतियों का जवाब है, 2026 में अवसरों के लिए तैयारी कर रहा है। वैश्विक चुनौतियों, संबंधित घटनाओं, अंतरराष्ट्रीय अस्थिरता, चीन–पाकिस्तान प्रतिद्वंद्विता, और रूस–यूक्रेन संकट के सामने, भारत को संतुलित, दृष्टि–आधारित और अवसर–आधारित कूटनीति का पालन करने की आवश्यकता है। ऐसी नीति का लक्ष्य केवल संकटों को कम करना नहीं होना चाहिए, बल्कि विश्व नेतृत्व और रणनीतिक स्वतंत्रता के माध्यम से दीर्घकालिक राष्ट्रीय हितों की सेवा करना भी होना चाहिए।

क्यों आज भी लाखों लोग आंतरिक शांति के लिए परमहंस योगानंद की ओर मुड़ते हैं- विधि बिरला

बाक़ी सब कुछ प्रतीक्षा कर सकता है, लेकिन ईश्वर की खोज प्रतीक्षा नहीं कर सकती

–विधि बिरला

इस सरल किंतु गहन स्मरण के साथ परमहंस योगानंद ने मानवता को जीवन के केंद्र में आत्म–साक्षात्कार की खोज रखने का आह्वान किया। जैसे–जैसे संसार उनकी 133वीं जयंती का स्मरण करता है, उनका जीवन और शिक्षाएँ संस्कृतियों, आस्थाओं और पीढ़ियों के पार गूंजती रहती हैंकृशांति, स्पष्टता और दिव्य प्रेम का कालातीत संदेश देते हुए। 5 जनवरी 1893 को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में जन्मे परमहंस योगानंद में बचपन से ही आध्यात्मिक सत्य की तीव्र प्यास थी। यही आकांक्षा उन्हें उनके पूज्य गुरु, स्वामी श्री युक्तेश्वर गिरि के चरणों तक ले गई, जिनके दृढ़ किंतु करुणामय मार्गदर्शन में उन्होंने सर्वोच्च आध्यात्मिक साक्षात्कार प्राप्त किया। 1915 में वे भारत के प्राचीन स्वामी संन्यास–आदेश में प्रविष्ट हुए और 1920 में, एक दिव्य आह्वान के प्रत्युत्तर में, आधुनिक विश्व के साथ भारत की ईश्वर–साक्षात्कार की प्राचीन विद्या साझा करने हेतु संयुक्त राज्य अमेरिका गए। पश्चिम में योग के अग्रदूत दूत के रूप में, योगानंद ने लाखों लोगों को क्रिया योग से परिचित करायाकृध्यान की वह वैज्ञानिक विधि जो महावतार बाबाजी, लाहिड़ी महाशय और स्वामी श्री युक्तेश्वर की अखंड परंपरा से सुरक्षित रही है। इस पावन साधना के बारे में वे कहते थे, "क्रिया योग और भक्तिकृ यह गणित की तरह काम करता है; यह असफल नहीं हो सकता।" ध्यान के माध्यम से, उन्होंने सिखाया कि मनुष्य अपने ही चौतन्य में ईश्वर को शांति, आनंद और मार्गदर्शक प्रज्ञा के रूप में प्रत्यक्ष अनुभव कर सकता है। उनकी आध्यात्मिक कृति ऑटोबायोग्राफी ऑफ़ ए योगी सर्वकालिक सबसे प्रभावशाली आध्यात्मिक पुस्तकों में से एक है। पचास से अधिक भाषाओं में अनूदित यह ग्रंथ दुनिया भर के पाठकों को प्रेरित करता रहा हैकृतकनीकी अग्रणी स्टीव जॉब्स सहित, जिन्होंने इसे प्रतिवर्ष पुनः पढ़ा और व्यापक रूप से भेंट कियाकृसाथ ही रजनीकांत और विराट कोहली जैसे सार्वजनिक व्यक्तित्वों को भी। असंख्य साधकों के लिए यह पुस्तक ध्यान की ओर प्रवेश–द्वार और जीवन के आध्यात्मिक उद्देश्य की गहरी समझ का माध्यम बनी है। अपने शिष्यों के लिए परमहंस योगानंद, सर्वोपरि, दिव्य प्रेम के शिक्षक थे। 'प्रेमावतार'कृअर्थात प्रेम के साकार रूपकृके रूप में वर्णित, वे अपनी ऊष्मा, करुणा और आध्यात्मिक स्पष्टता से अपने सान्निध्य में आने वाले सभी को उन्नत करते थे। ईश्वर के साथ उनका संबंध अत्यंत अंतरंग और व्यक्तिगत था, जो दिव्य माता के प्रति भक्ति में व्यक्त होता थाकृजिन्हें वे स्नेहमयी, प्रत्युत्तरशील और सदैव उपस्थित के रूप में अनुभव करते थे। फिर भी उनका प्रेम सदा शक्ति और विवेक से संतुलित था। वे बल देते थे कि सच्चा धर्म व्यावहारिक होना चाहिएकृ केवल विश्वास पर नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष आंतरिक अनुभव पर आधारित। आध्यात्मिकता, उनके अनुसार, जीवन से पलायन नहीं, बल्कि साहस, संतुलन और आनंद के साथ जीने का मार्ग हैकृचाहे कोई गृहस्थ हो या संन्यासी। उनका मिशन सरल और गहन थारू हर हृदय में ईश्वर–प्रेम को जाग्रत करना और यह दिखाना कि दैनिक जीवन की जिम्मेदारियों के बीच भी आध्यात्मिक साक्षात्कार संभव है। ध्यान, सदाचारपूर्ण जीवन, निःस्वार्थ सेवा और भक्तिकृयही उनकी शिक्षाओं की आधारशिला थी। 1917 में परमहंस योगानंद ने भारत में योगदा सत्संग सोसाइटी (ल्ै) की स्थापना की, जो आज भी आश्रमों, ध्यान केंद्रों, शिविरों और प्रकाशनों के माध्यम से देशभर में उनकी शिक्षाओं का प्रसार कर रही है। क्रिया योग सहित योगदा ध्यान–पद्धति के द्वारा, भारत और विश्व के साधक उनके मार्गदर्शन से प्रेरणा पाते हुए अंतःस्थ शांति और दिव्य संयोग की रूपांतरकारी शक्ति का अनुभव कर रहे हैं। यद्यपि उनका प्रभाव लाखों तक पहुँचा, योगानंद के जीवन का सार विनम्र और अत्यंत व्यक्तिगत रहारू ईश्वर से प्रेम करना और दूसरों को उसी प्रेम की खोज में सहायता करना। अपने शिष्यों के साथ इस पावन बंधन को व्यक्त करते हुए उन्होंने एक बार कहारू "मैं तुमसे ईश्वर में तुम्हारे आनंद के अतिरिक्त कुछ नहीं चाहता। और तुम मुझसे ईश्वर की प्रज्ञा और आनंद के अतिरिक्त कुछ नहीं चाहते।" अपने जन्म के एक शताब्दी से अधिक समय बाद भी, परमहंस योगानंद आधुनिक विश्व के आध्यात्मिक परिदृश्य में एक दीप्तिमान उपस्थिति बने हुए हैंकृएक सौम्य किंतु शक्तिशाली स्मरण कि स्थायी शांति भीतर से आरंभ होती है, और दिव्य प्रेम दूर नहीं, बल्कि हर आत्मा में साकार होने की प्रतीक्षा कर रहा है।

भारत–कनाडा व्यापार संबंधों की सफलता में इंडो–कनाडियन समुदाय की भूमिका

–मनिंदर सिंह गिल

अमरीकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा इस साल 2 अप्रैल से भारतीय उत्पादों पर 25 प्रतिशत टैरिफ और रूस से तेल खरीदने के कारण उतना ही अतिरिक्त 'जुर्माना' भी लगाया गया, जिससे कुल टैरिफ बढ़ कर 50 प्रतिशत हो गया। भारतीय निर्यात पर इसके विपरीत प्रभाव को देखते हुए भारत के लिए आवश्यक हो गया कि वह अन्य बाजारों में अवसर खोजे और इसी के परिणामस्वरूप कुछ देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौते (एफ.टी.ए.) किए गए। इन्हीं में कनाडा भी एक है जिसके साथ एफ.टी.ए. के लिए बातचीत चल रही है। कनाडा सरकार ने भारत–कनाडा मुक्त व्यापार समझौते (एफ.टी.ए.) पर जनता की राय लेने के लिए अभियान शुरू कर दिया है। मगर भारत विरोधी वर्ल्ड सिख ऑर्गेनाइजेशन (डब्ल्यू.एस.ओ.) और दूसरे खालिस्तानी संगठन एफ.टी.ए. के खिलाफ प्रचार कर रहे हैं ताकि वह पटरी पर न चढ़ सके। हमारे संगठन फ्रैंड्स ऑफ कनाडा एंड इंडिया फैडरेशन ने एफ.टी.ए. के समर्थन में कनाडा के अंतरराष्ट्रीय व्यापार के मंत्री मनिंदर सिद्धू को एक पत्र लिखा है, हम पूरे कनाडा में रेडियो और टी.वी. के जरिए लोगों को इसका समर्थन करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं, इससे डायस्पोरा (कनाडा में रहते भारतीय) को मदद मिलेगी। सबमिशन की आखिरी तारीख 27 जनवरी है। पत्र में हमने लिखा है–हमें यह जानकर खुशी हुई कि भारतीय व्यापार मंत्री श्री पीयूष गोयल के नेतृत्व में भारतीय व्यापार मिशन नए साल में ओटावा का दौरा कर रहा है। भारत और कनाडा दो ऐसे समाज हैं, जिनकी लोकतंत्र, बहुलता और नियम–आधारित व्यवस्था के प्रति सम्मान की सांझी विरासत है, जो इन दोनों देशों को स्वाभाविक सहयोगी बनाती है। दोनों देशों के हित आर्थिक क्षेत्र में भी मिलते हैं। आपसी हितों की यह बैठक व्यापक आथ्र्थक सांझेदारी समझौते (सी.ई.पी.ए.) के सफल निष्पादन में बदलनी चाहिए। सरकारें इस बात से अच्छी तरह वाकिफ हैं कि यह सांझेदारी तेल और गैस, खनिज और कृषि जैसे क्षेत्रों में किस मैक्रोइकोनॉमिक पैमाने पर पहुंच सकती है, जहां व्यापार में +25 बिलियन से बढ़ाकर +50 बिलियन का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा गया है। भारत और कनाडा के संबंध खास हैं क्योंकि हमारे लोगों के बीच मजबूत संबंध हैं। इंडो–कनाडियन समुदाय की जड़ें कनाडा में 1887 से हैं। इंडो–कनाडियन समुदाय दोनों देशों के बीच एक जीवित पुल की तरह है।

भारतीय महिलाओं के बच्चे न पैदा करने का असली कारण

–रश्मी बंसल

महिलाओं की प्रजनन क्षमता पर हर किसी की अपनी राय है। जोहो के श्रीधर वेम्बू ने हाल ही में इस विषय पर अपनी राय देते हुए महिलाओं को सलाह दी कि वे 20 की उम्र में ही बच्चे पैदा कर लें, न कि इस फैसले को टालें। महिलाओं को प्रजनन संबंध ी ज्ञान देना कोई नई बात नहीं है। गर्भनिरोधक के अभाव के दौर में, इसका मतलब था कुंवारी युवा दुल्हनों की जल्दी शादी कर देना और क्रिकेट टीम के आकार के परिवार पैदा करना। वास्तव में, कोई विकल्प नहीं था, यह प्रजाति के अस्तित्व का सवाल था। फिर, हमने बीमारियों को रोकने के तरीके खोजे, यहां तक कि कुछ को खत्म भी कर दिया। जो बच्चे पहले जन्म के समय या शिशु अवस्था में मर जाते थे, वे नहीं मरने लगे। जनसंख्या का आंकड़ा लाखों से बढ़कर एक अरब से अधिक हो गया, सटीक रूप से कहें तो 1.4 अरब। अब, अर्थशास्त्री और विचार–संस्थाएं चेतावनी दे रही हैं कि हमारा जनसांख्यिकीय लाभांश जनसांख्यिकीय गिरावट में बदल रहा है। हममें से जो लोग ऐसे युग में पले–बढ़े हैं, जहां सरकार ने 'हम दो, हमारे दो' को आदर्श के रूप में बढ़ावा दिया, उनके लिए यह बात स्वाभाविक रूप से भ्रमित करने वाली है। फिर, जनसंख्या को एक 'समस्या' के रूप में बेचा गया और निरोध को रामबाण के रूप में प्रस्तुत किया गया। अब बात करते हैं 'जैनरेशन एक्स' की, जो 1990 के दशक में शादी के लिए तैयार हुई। रविवार के अखबारों में आधे से ज्यादा सांकेतिक भाषा में लिखे वैवाहिक विज्ञापन भरे रहते थे। आई.आई.एम. अहमदाबाद के 1993 बैच (जिसमें मैं भी शामिल हूं) के पास 'प्रेम विवाह' या 'तयशुदा विवाह' का विकल्प था। 'मैं शादी नहीं करूंगा' जैसा कोई विकल्प था ही नहीं। शादी के बाद, आप 2 से 5 साल के भीतर 'खुशखबरी' सुना देते थे। हममें से कई लोग 'हमारे दो' से 'हमारा एक' पर पहुंच गए, लड़का हो या लड़की, कोई भी चलेगा। तो, अगली पीढ़ी के लिए एकमात्र ताध्कक संख्या शून्य ही हो सकती थी। और अब जब आप स्वाइप करके अपनी जिंदगी जी सकते हैं, तो शादी करने की जरूरत ही क्या है? लेकिन यहां तक कि जो लोग करण जौहर से प्रेरित अपनी खुद की शादी के प्रोडक्शन के स्टार बनने से खुद को रोक नहीं सकते, उनके लिए भी बच्चे अभी नहीं हैं–अभी नहीं, और शायद कभी नहीं। ऐसा क्यों हो रहा है, इस बारे में कई तरह के सिद्धांत हैं। 'लड़कियां करियर पर बहुत ज्यादा ध्यान देना चाहती हैं' से लेकर 'युवा बड़े होकर जिम्मेदारी नहीं लेना चाहते' तक। लेकिन जिन साहसी माता–पिता के बच्चे हैं, उन्हें देखकर मैं एक अलग निष्कर्ष पर पहुंची हूं। समस्या शायद वही है जिसे मैं 'परफैक्ट पेरैंट सिंड्रोम' कहती हूं।जीवन में उच्च उपलब्धि हासिल करने वाले आज के युवा जोड़े न केवल कार्यालय में, बल्कि पालन–पोषण के क्षेत्र में भी सर्वोच्च स्थान पाने का प्रयास करते हैं। मैंने ऐसे माता–पिता देखे हैं, जो आगंतुकों से कहते हैं कि 'घंटी न बजाएं' क्योंकि इससे बच्चे को परेशानी होगी। ऐसे माता–पिता भी हैं, जो यह सुनिश्चित करते हैं कि उनका बच्चा कभी भी अकेला न रहे, एक मिनट के लिए भी नहीं। और ऐसे भी हैं जो चम्मच लेकर उनके पीछे–पीछे दौड़ते रहते हैं और कहते हैं, 'बस एक और निवाला!' स्वाभाविक रूप से, इंस्टाग्राम पर दिखने वाली मनमोहक तस्वीरों के बावजूद, पालन–पोषण करना बेहद थका देने वाला काम है। 'क्रिकेट टीम' पालने वाली हमारी दादी–नानी को ऐसी कोई ड्क्षचता नहीं होती थी। उनके पास चाचा–बुआ, दीदी–भैयाओं का एक पूरा समूह होता था, जो मिलकर बच्चे की परवरिश करता था। इसका मूल अर्थ था– बच्चे को खाना खिलाना और कपड़े पहनाना। साथ ही, यह भी सुनिश्चित करना कि कहीं वह आसपास पड़ी चमकदार ध ातु की वस्तुओं को निगलकर खुद को नुकसान न पहुंचा ले।अब सारा दबाव माता–पिता पर है, विशेषकर मां पर। अगर वह काम करती है, तो इसका मतलब है ऑफिस की राजनीति के साथ–साथ घर पर नौकरानी, सहायक नौकरानी, रसोइया, आया, ड्राइवर, धोबी आदि का भी ध्यान रखना। और इतनी सारी मदद के बावजूद और सिर्फ एक बच्चे के साथ भी, वह अपनी मां से 10 गुना ज्यादा तनाव में रहती है, जो दिन में 3 बार खाना खुद बनाती थी।तो, आप पूछ सकते हैं कि इसका समाधान क्या है? कम उम्र में (20 के दशक के अंत में) बच्चे पैदा करना–हां, कुछ समय के लिए यह थोड़ा अस्त–व्यस्त जरूर होगा, लेकिन फिर आपके पास 40 और उसके बाद का पूरा जीवन आनंद लेने के लिए होगा या फिर देर से (30 के दशक के मध्य और उसके बाद) बच्चे पैदा करना–आपके पास ज्यादा संसाधन होंगे और (उम्मीद है) आप ज्यादा परिपक्व भी होंगे?

4000 ब्रेल पुस्तकों के साथ यूपी के पहले राज्य विवि में खुला ब्रेल पुस्तकालय

योगी सरकार की दिव्यांग सशक्तिकरण नीति को मिला नया आयाम

150 से अधिक पाठकों की क्षमता, लुई ब्रेल की जयंती पर दृष्टि दिव्यांगों को मिला शिक्षा का उपहार

लखनऊ ब्यूरो

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की समावेशी शिक्षा और दिव्यांग सशक्तिकरण की नीति को धरातल पर उतारते हुए डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय में प्रदेश के पहले राज्य विश्वविद्यालय स्तरीय ब्रेल पुस्तकालय अनुभाग का शुभारंभ किया गया। मुख्य अतिथि कुलपति आचार्य संजय सिंह ने स्वामी विवेकानंद केंद्रीय पुस्तकालय के प्रथम तल पर स्थापित इस अत्याधुनिक ब्रेल पुस्तकालय का उद्घाटन किया। इससे पूर्व कुलपति ने विश्वविद्यालय के ब्रेल प्रेस परिसर में ब्रेल लिपि के जनक लुई ब्रेल की जयंती पर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया। इसके पश्चात फीता काटकर ब्रेल पुस्तकालय अनुभाग का विधिवत उद्घाटन किया गया।

दृष्टि दिव्यांगों को मिलेगा कंप्यूटर प्रशिक्षण

कार्यक्रम का शुभारंभ कुलपति द्वारा दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों का हाथ पकड़कर दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। इस अवसर पर उन्होंने दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया और विश्वविद्यालय प्रशासन को निर्देश दिए कि उन्हें आधुनिक कंप्यूटर प्रशिक्षण भी उपलब्ध कराया जाए। उन्होंने कहा कि ब्रेल लिपि दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए शिक्षा का सशक्त माध्यम है, जो उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ती है।

54 उच्च शिक्षा पाठ्यक्रमों की 4000 से अधिक ब्रेल पुस्तकें

प्रदेश के पिछड़ा वर्ग कल्याण एवं दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) नरेन्द्र कश्यप ने कहा कि ब्रेल पुस्तकालय में विश्वविद्यालय के ब्रेल प्रेस से प्रकाशित यूजी एवं पीजी स्तर के 54 पाठ्यक्रमों की एनईपी आधारित 4000 से अधिक शैक्षणिक ब्रेल पुस्तकें उपलब्ध हैं। यह प्रदेश का पहला ऐसा राज्य विश्वविद्यालय है, जहां इतनी बड़ी संख्या में ब्रेल पुस्तकों का सुव्यवस्थित पुस्तकालय अनुभाग विकसित किया गया है। पुस्तकालय में 150 से अधिक विद्यार्थियों के बैठकर अध्ययन करने की सुविधा वाला रीडिंग रूम भी तैयार किया गया है।

10 हजार ब्रेल पुस्तकों का लक्ष्य

प्रवक्ता एवं पुस्तकालय प्रभारी प्रो. यशवंत वीरोदय ने बताया कि इस वर्ष ब्रेल पुस्तकों की संख्या बढ़ाकर 10 हजार करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। यहां शैक्षणिक पुस्तकों के साथ–साथ नोवेल, नाटक, महापुरुषों की जीवनियां और साहित्यिक कृतियां भी उपलब्ध हैं।

बाहरी दृष्टि दिव्यांग भी ले सकेंगे सुविधा

उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सबको शिक्षा की भावना के अनुरूप यह पुस्तकालय केवल विश्वविद्यालय तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि बाहरी दृष्टि दिव्यांग भी सदस्यता लेकर यहां अध्ययन कर सकेंगे। इसके लिए विशेष, आकस्मिक और कॉर्पोरेट सदस्यता की व्यवस्था की गई है। विशेष सदस्यता विद्वानों, शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों और अन्य लखनऊ के निवासियों को मिलेगी। इसके लिए सदस्यता फॉर्म के साथ दो आवासीय प्रमाण देने होंगे। पुनर्वास विवि के अतिथि प्रवक्ता, सेवानिवृत्त अध्यापक, कर्मचारी पुस्तकालय शुल्क जमा कर विशेष सदस्य हो सकेंगे। आकस्मिक सदस्यता एक बार में छह माह तक दी जा सकेगी। इसके तहत राशि का भुगतान कर पुस्तकालय संसाधनों का लाभ उठा सकते हैं। अनियमित सदस्यों को कोई पुस्तक जारी नहीं की जाएगी। कॉर्पोरेट सदस्यता के लिए वार्षिक सदस्यता शुल्क जमा कर लखनऊ का कोई भी संगठन पुस्तकालय का सदस्य बन सकेगा। इसके तहत संगठन छह पुस्तकालय टिकटों के हकदार होंगे। यह सुविधा संगठन अपने कार्यरत कर्मचारियों को देगा।

दृष्टि दिव्यांगों ने जताया आभार

ब्रेल शोध छात्र अजय कुमार द्विवेदी, रोहित, राम सकल, मनोज और अजय सहित अन्य दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों ने इस पहल के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और विश्वविद्यालय प्रशासन का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि लुई ब्रेल ने उन्हें पढ़ने की लिपि दी, जबकि विश्वविद्यालय ने सम्मानजनक व्यवस्था और अवसर प्रदान किया।

नगर निगम जलकल विभाग की अपील : पेयजल पाइपलाइन में लीकेज या गंदा पानी आने पर तुरंत दें सूचना

लखनऊ ब्यूरो

लखनऊ। नगर निगम के जलकल विभाग ने शहरवासियों से अपील की है कि यदि उनके क्षेत्र में कहीं भी पेयजल आपूर्ति से जुड़ी किसी प्रकार की समस्या दिखाई दे, तो उसे नजरअंदाज न करें और तुरंत विभाग को सूचित करें। विभाग के अनुसार, कई स्थानों पर पेयजल पाइपलाइन में लीकेज, पाइप फटने या गंदा पानी आने की शिकायतें सामने आती हैं, जिनका समय पर समाधान न होने पर आमजन को गंभीर परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। जलकल विभाग ने नागरिकों की सुविधा के लिए कंट्रोल रूम और हेल्पलाइन नंबर जारी किए हैं, ताकि शिकायत मिलते ही संबंधित टीम को मौके पर भेजा जा सके। विभाग ने स्पष्ट किया है कि अगर कहीं से भी नलों में गंदा, बदबूदार या मटमैला पानी आ रहा हो, या सड़क पर पानी का रिसाव दिखे, तो लोग तुरंत कंट्रोल रूम से संपर्क करें।

कंट्रोल रूम नंबर इस प्रकार हैं–

8177054100

8177054003

8177054010

इन नंबरों पर कॉल कर शिकायत दर्ज कराने से समस्या का त्वरित निराकरण संभव हो सकेगा। विभाग का कहना है कि कई बार छोटी लीकेज समय के साथ बड़ी समस्या बन जाती है, जिससे पानी की बर्बादी के साथ–साथ स्वास्थ्य संबंधी जोखिम भी बढ़ जाते हैं। गंदा पानी पीने से जलजनित बीमारियों का खतरा रहता है, इसलिए सतर्कता बेहद जरूरी है। जलकल विभाग के जीएम कुलदीप सिंह ने बताया कि शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराना नगर निगम के जलकल विभाग की प्राथमिक जिम्मेदारी है। इसके लिए विभाग लगातार निगरानी कर रहा है, लेकिन आम नागरिकों के सहयोग के बिना हर समस्या की जानकारी तुरंत मिल पाना संभव नहीं होता। उन्होंने कहा कि नागरिकों द्वारा समय पर दी गई सूचना से न केवल समस्या का समाधान जल्दी किया जा सकता है, बल्कि पानी की अनावश्यक बर्बादी को भी रोका जा सकता है। उन्होंने सभी नागरिकों से अपील की कि जल संरक्षण को अपनी जिम्मेदारी समझें और किसी भी प्रकार की गड़बड़ी दिखने पर तुरंत जलकल विभाग को सूचित करें, ताकि शहरवासियों को सुरक्षित और स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराया जा सके।

ग्राहक बनकर आया,24 अंगूठियों के 2 बॉक्स लेकर भागा चोर

संवाददाता

लखनऊ। राजधानी में ज्वेलरी की दुकान से एक चोर अंगूठियों के 2 बॉक्स लेकर भाग गया। इन बॉक्स में 24 अंगूठियां थीं। चोर ग्राहक बनकर आया था। उसने ज्वेलर से एक–एक करके 4 डिब्बे मंगवाए। इसके बाद भी बोला और कुछ दिखाइए। इस पर ज्वेलर सभी डिब्बे काउंटर पर छोड़कर दुकान के अंदर वाले कमरे में चला गया। इसी बीच चोर कुर्सी से उठा। उसने काउंटर पर रखे डिब्बों में से 2 को खोल–खोलकर चेक किया। दोनों में सोने की छोटी–बड़ी अंगूठियां थीं। इसके बाद वह दोनों बॉक्स हाथों में लेकर भाग निकला। कुछ ही देर बाद ज्वेलर और डिब्बे लेकर दुकान के अंदर से बाहर आया, तब उसे चोरी का पता चला। मामला जानकीपुरम इलाके का है। जानकीपुरम इलाके में 60 फिटा रोड पर खुशी ज्वेलर्स है। यहां आज (रविवार) सुबह करीब 10.20 बजे चोरी हुई। एक युवक बाइक से ग्राहक बनकर पहुंचा। ज्वेलर से अंगूठी दिखाने के लिए बोला। इसके बाद पसंद न आने की बात कही। जब और अंगूठियां लेने के लिए ज्वेलर दुकान के अंदर गया, तभी मौका पाकर चोर दो डिब्बे लेकर भाग गया। उन डिब्बों में करीब 24 अंगूठियां रखी थीं। मौके पर पहुंची पुलिस सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपी की पहचान करने में जुटी है। पुलिस आसपास के इलाकों में लगे कैमरों की भी जांच कर रही है। इंस्पेक्टर जानकीपुरम विनोद तिवारी का कहना है कि सीसीटीवी के जरिए आरोपी की लोकेशन ट्रेस की जा रही है। जल्द गिरफ्तारी कर ली जाएगी।

संक्षिप्त

पर्यटन विभाग की विशेष सचिव के खिलाफ कर्मचारियों ने खोला मोर्चा, प्रमुख सचिव को लिखा खत

संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के पर्यटन विभाग में तैनात सचिवालय अधिकारियों और कर्मचारियों में अपनी ही अधिकारी को लेकर असंतोष है। विशेष सचिव ईशा प्रिया पर गंभीर मानसिक उत्पीड़न और अभद्र व्यवहार के आरोप लगाते हुए कर्मचारियों ने मोर्चा खोल दिया है।कर्मचारियों ने प्रमुख सचिव को पत्र लिखकर दो टूक शब्दों में कह दिया है कि ऐसी परिस्थितियों में उनके लिए विभाग में कार्य करना शारीरिक और नैतिक रूप से अब संभव नहीं रह गया है। शिकायती पत्र में कर्मचारियों ने आरोप लगाया है कि विशेष सचिव द्वारा कई महीनों से विभाग के अधिकारियों, कर्मचारियों का उत्पीड़न किया जा रहा है। पत्र के अनुसार अब तक राज्य सरकार की जनहितकारी योजनाओं के क्रियान्वयन के हित में कर्मचारी इस व्यवहार को चुपचाप सहन कर रहे थे, लेकिन अब उत्पीड़न की सीमा सहनशक्ति से बाहर हो गई है।कर्मचारियों ने विशेष सचिव की कार्यशैली पर गंभीर सवाल उठाते हुए कहा है कि उन्हें लगभग प्रतिदिन पर्यटन निदेशालय बुलाया जाता है। आरोप है कि वहां निदेशालय के अन्य कर्मचारियों के सामने ही सचिवालय के अधिकारियों के साथ अत्यंत खराब और अपमानजनक व्यवहार किया जाता है। पत्र में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि विशेष सचिव कई अवसरों पर अधिकारियों को प्रतिकूल प्रविष्टि देने की धमकी देकर डराती धमकाती हैं।सचिवालय संघ के समर्थन के साथ लिखे गए इस पत्र में मांग की गई है कि पर्यटन विभाग के प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी को तत्काल उनके मूल विभाग यानी सचिवालय प्रशासन विभाग को समर्पित कर दिया जाए। कर्मचारियों का कहना है कि वे इन अपमानजनक परिस्थितियों में यहां कार्य करने के बिल्कुल इच्छुक नहीं हैं।

यूपी में एमएसएमई, धार्मिक पर्यटन व हॉस्पिटैलिटी सेक्टर में निवेश करेंगे कनाडा के उधमी

कैनेडियन हिंदू चौंबर्स ऑफ कॉमर्स से आए प्रतिनिधिमंडल ने रविवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से की मुलाकात

लखनऊ ब्यूरो

लखनऊ। कैनेडियन हिंदू चौंबर्स ऑफ कॉमर्स के प्रतिनिधिमंडल ने रविवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की। मुख्यमंत्री ने प्रतिनिधिमंडल के सभी 24 सदस्यों का स्वागत किया। कैनेडियन हिंदू चौंबर्स ऑफ कॉमर्स के संस्थापक अध्यक्ष नरेश कुमार चावड़ा के नेतृत्व में आए प्रतिनिधि मंडल ने उत्तर प्रदेश के अंदर एमएसएमई, धार्मिक पर्यटन व हॉस्पिटैलिटी सेक्टर में निवेश की इच्छा जताई। इस पर मुख्यमंत्री ने उन्हें उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से हरसंभव मदद का भरोसा दिलाया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सदस्यों को अयोध्या में रामलला, काशी में काशी विश्वनाथ धाम तथा प्रयागराज के भ्रमण के लिए आमंत्रित किया। मुख्यमंत्री जी ने प्रतिनिधिमंडल से प्रधानमंत्री जी की मंशा के अनुरूप ट्रेड, टेक्नोलॉजी व टूरिज्म की दिशा में नए प्रयास बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि 8–9 वर्ष पहले त्योहारों पर बाजार चीन के उत्पादों से भरा रहता था, लेकिन हमने 2018 में परंपरागत उद्यम को 'एक जिला–एक उत्पाद' के माध्यम से आगे बढ़ाया। इन उत्पादों को डिजाइन, तकनीक व प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराया गया। इन्हें सितंबर के अंतिम सप्ताह में होने वाले यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो में शोकेस का भी अवसर देते हैं। सीएम ने बताया कि आज यूपी के बाजार से चीन के उत्पाद गायब हो गए हैं। सरकार सभी 96 लाख एमएसएमई यूनिट को सपोर्ट कर रही है और सामाजिक सुरक्षा की गारंटी दे रही है। इनके जरिए ढाई करोड़ परिवार की आजीविका जुड़ी है। एक जिला–एक उत्पाद के माध्यम से ब्रांडिंग कराई गई है। अब इनके उत्पादों को बड़े मंचों पर उपहार स्वरूप प्रदान किया जा रहा है। मुख्यमंत्री जी ने प्रतिनिधिमंडल को बताया कि भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। साथ ही यह दुनिया की सबसे तेज गति से उभरने वाली अर्थव्यवस्था भी है। यूपी अर्थव्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में शीर्ष तीन राज्यों में आता है। यहां देश की सबसे बड़ी आबादी निवास करती है। मुख्यमंत्री ने प्रतिनिधिमंडल को यूपी की नई गति से परिचित कराया। कहा कि यूपी संभावनाओं का प्रदेश है। यहां सुरक्षा, सुव्यवस्था व निवेश की बेहतर स्थिति है। गत वर्ष हुए ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में 40 लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए। इसमें से 15 लाख करोड़ रुपये की ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी हो चुकी है। शेष पांच लाख करोड़ के प्रस्ताव फिर से जीबीसी के लिए तैयार हैं। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि चौंबर्स के सदस्य यूपी में निवेश और तकनीक के साथ एफडीआई लाने में मदद कर सकते हैं। एफडीआई व फार्चून 500 कंपनियों के लिए यूपी में अलग पॉलिसी बनाई गई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यूपी भारत के विरासत से जुड़े स्थलों का प्रतिनिधित्व भी करता है। दुनिया का सबसे बड़ा सांस्कृतिक व आध्यात्मिक आयोजन महाकुम्भ पिछले वर्ष उत्तर प्रदेश में संपन्न हुआ। इसमें 66 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने आस्था की डुबकी लगाई। सीएम ने यूपी में पर्याप्त जल संसाधन व उर्वरा भूमि से भी अवगत कराया। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि यहां गत वर्षों में इंफ्रास्ट्रक्चर पर विशेष ध्यान दिया गया है। एक्सप्रेसवे का 55 प्रतिशत नेटवर्क यूपी के पास है। यहां की कनेक्टिविटी काफी बेहतर हुई है। ग्रीन फील्ड एक्सप्रेसवे भी यहां है। यूपी के पास सबसे बड़ा रेल नेटवर्क, सर्वाधिक शहरों में मेट्रो, रैपिड रेल व पहला वाटरवे भी संचालित हो रहा है। उन्होंने कहा कि यहां 11 घरेलू व 4 अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट क्रियाशील हैं। एशिया के सबसे बड़े एयरपोर्ट जेवर का शुभारंभ जल्द होने जा रहा है। यूपी संभावनाओं का प्रदेश है। नोएडा में फिल्म सिटी व अपैरल पार्क, लॉजिस्टिक हब विकसित किया जा रहा है। यूपी डेटा सेंटर का नया केंद्र बन रहा है। यूपी में चार डेटा सेंटर संचालित हैं, छह नए संचालित होने जा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश में साढ़े आठ वर्ष से अराजकता नहीं है। यहां कानून की सुदृढ़ व्यवस्था है। मुख्यमंत्री ने लखनऊ में बनने जा रही एआई सिटी का भी जिक्र कर उद्यमियों को यहां की संभावनाओं से अवगत कराया। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि किसानों द्वारा उत्पादित खाद्यान्नों के एक्सपोर्ट के लिए कनाडा व अन्य देशों में योगदान दे सकते हैं। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि बुद्ध व जैन तीर्थंकर से जुड़े सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थल भी उत्तर प्रदेश में हैं। लिहाजा यहां टूरिज्म को विकसित करने में चौंबर्स के सदस्य बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। लोगों को इन स्थलों के बारे में जानकारी दे सकते हैं। उन्हें यह भी बता सकते हैं कि सुविधा की दृष्टि से कब–कब इन स्थलों पर जाना चाहिए। यूपी के सभी तीर्थस्थलों तक पहुंचने के लिए एयर, रोड कनेक्टिविटी बहुत अच्छी है।

50 बेड का हॉस्पिटल खोलेंगे चौंबर्स के सदस्य, बच्चों को यूपी के धार्मिक स्थलों का कराएंगे भ्रमण

कैनेडियन हिंदू चौंबर्स ऑफ कॉमर्स के संस्थापक अध्यक्ष व चेयरमैन बोर्ड ऑफ ट्रस्टी नरेश कुमार चावड़ा ने मुख्यमंत्री जी के प्रति आभार जताया। उन्होंने बताया कि कनाडा में प्रत्येक वर्ष 'इन्वेस्ट इंडिया–इन्वेस्ट कनाडा' का आयोजन किया जाता है, लेकिन इस वर्ष 2026 में यह आयोजन तीन बार किया जाएगा। इसमें से दो आयोजन यूपी केंद्रित होंगे। उन्होंने मुख्यमंत्री जी को अवगत कराया कि एमएसएमई, धार्मिक पर्यटन व हॉस्पिटैलिटी सेक्टर में उनकी टीम यूपी में कार्य करेगी। जुलाई–अगस्त व दिसंबर– जनवरी में प्रवासी भारतीयों के उन बच्चों को, जिनका जन्म कनाडा में हुआ है, उन्हें यूपी लाकर धार्मिक स्थलों का भ्रमण कराएंगे। साथ ही यूपी में 50 बेड का हॉस्पिटल व सीनियर सिटिजन होम्स की भी स्थापना करेंगे।

चारबाग स्टेशन पर भीड़ कम करने के लिए बनेगा होल्डिंग एरिया, सिटिंग से लेकर आराम करने तक होगी सुविधा

लखनऊ ब्यूरो

लखनऊ। चारबाग रेलवे स्टेशन पर यात्रियों की सुविधा के लिए स्थायी होल्डिंग एरिया बनाया जाएगा। रेल कोच रेस्टोरेंट के सामने पार्किंग की जमीन पर इसे तैयार किया जाएगा। यहां 25 सौ तक यात्री रुक सकेंगे। यात्रियों को एलईडी के जरिए ट्रेनों की जानकारी भी यहां पर मिलेगी। पीक सीजन व त्योहारों पर चारबाग, वाराणसी, अयोध्या सरीखे प्रमुख स्टेशनों पर होल्डिंग एरिया बनाए जाते रहे हैं। इससे भीड़ को नियंत्रित करने यात्रियों को ठहराने में खासी राहत हो जाती है। इन होल्डिंग एरिया से होने वाली सुविधाओं को दृष्टिगत रखते हुए हाल ही में रेलवे बोर्ड की ओर से 70 रेलवे स्टेशनों पर स्थायी रूप से इन्हें बनाने के निर्देश दिए गए। इसमें चारबाग, वाराणसी, अयोध्या, गोरखपुर प्रमुख रूप से शामिल हैं। लिहाजा रेलवे अधिकारियों ने परमानेंट होल्डिंग एरिया बनाने की तैयारियां शुरू कर दी है। इसके तहत ही चारबाग स्टेशन पर पार्किंग की जगह को चिन्हित किया गया है, जहां होल्डिंग एरिया बनाया जाएगा। इसमें सिटिंग व आराम करने की जगह के अतिरिक्त यात्रियों के लिए पेयजल, एलईडी की व्यवस्था भी होगी, ताकि उन्हें अपनी ट्रेनों की जानकारियां भी मिलती रहें। जगह चिन्हित हो गई है, जल्द ही यहां पर निर्माण कार्य शुरू कर दिए जाएंगे। होल्डिंग एरिया में 25 सौ तक यात्री ठहर सकेंगे। वृक्षों का भी होगा संरक्षण चारबाग स्टेशन पर जिस पार्किंग का चयन होल्डिंग एरिया के लिए किया गया है, वहां पहले स्टेशन अपग्रेडेशन कार्य के तहत कॉन्कोर्स बनाया जाना था। इसके तहत पीपल, अशोक, नीम आदि के वर्षों पुराने वृक्षों को काटने के लिए उनकी मार्किंग की गई थी। अब होल्डिंग एरिया बनने से इन वृक्षों का भी संरक्षण हो सकेगा। उत्तर रेलवे के सीनियर डीसीएम कुलदीप तिवारी का कहना है कि चारबाग स्टेशन पर रेल कोच रेस्टोरेंट के सामने की पार्किंग में स्थायी होल्डिंग एरिया बनाया जाएगा। इससे यात्रियों की भीड़ नियंत्रित करने में भी मदद मिलेगी। यहां यात्रियों को एलईडी पर ट्रेनों की जानकारियां भी मिलेंगी।

अखिलेश यादव बोले, भाजपा की गलत आर्थिक नीतियों की वजह से फल उत्पादकों की आजीविका खतरे में

संवाददाता

लखनऊ। समाजवादी पार्टी (सपा) अध्यक्ष अखिलेश यादव ने केंद्र सरकार की आर्थिक नीतियों की आलोचना करते हुए कहा है कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की गलत आर्थिक नीतियों की वजह से भारतीय फल उत्पादकों की आजीविका खतरे में पड़ गयी है। अखिलेश यादव ने रविवार को सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में आरोप लगाया कि मौजूदा सरकार में किसानों की कड़ी मेहनत का फल विदेशी कंपनियों की जेब में जा रहा है। उन्होंने भाजपा को व्यापारियों और बिचौलियों की पार्टी बताते हुए कहा कि भाजपा असल में उत्पादन और औद्योगिक विकास के बजाय कमीशन को प्राथमिकता देती है। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री की टिप्पणियां इस चिंता पर केंद्रित है कि अंतरराष्ट्रीय कारोबारी घरेलू फल उत्पादन और व्यापार क्षेत्रों पर तेजी से कब्जा कर रहे हैं। उन्होंने हाल के रुझानों और विज्ञापनों को भारतीय बागवानी उद्योग के लिए विनाश का पत्र बताया। उन्होंने कहा कि भाजपा के राज में खेती और बागवानी करने वालों को धोखा दिया जाएगा। अब फल का फल भी विदेशी कंपनियां ले जाएंगी! उन्होंने कहा कि यह बदलाव कोई अचानक हुआ आर्थिक विकास नहीं है, बल्कि सत्ताधारी पार्टी की सोच को दिखाता है। उन्होंने कहा, असल में भाजपा की सोच व्यापारियों वाली है। वे न तो उत्पादन करना चाहते हैं और न ही विनिर्माण। ये ऐसे लोग नहीं हैं जो काम करके कमाते हैं, ये ऐसे लोग हैं जो बीच में से खाते हैं। पीएम यादव ने भाजपा पर अर्थव्यवस्था को बिचौलियों का खेल का मैदान बनाने का आरोप लगाया है और दावा किया है कि सरकार का ध्यान सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई) और कोर उद्योगों को सहयोग करने करने की बजाय श्सुविधा शुल्कश और श्कमीशनश इकट्ठा करने पर चला गया है। अखिलेश यादव के अनुसार, यह शबिचौलिया संस्कृतिश भारत में महंगाई और बेरोजगारी के दोहरे संकट का सीधा कारण है। उन्होंने कहा कि बिचौलियों के दखल से आखिरी उपभोक्ता के लिए कीमतें कृत्रिम तरीके से बढ़ जाती हैं। उन्होंने कहा कि घरेलू उत्पादन पर ध्यान की कमी का मतलब युवाओं के लिए कम नौकरियां होना है।

जनहित के लिए किसी भी स्तर तक जाते थे रामचंद्र बख्श सिंह–भाकपा

संवाददाता

लखनऊ। रामचन्द्र बक्श सिंह कम्युनिस्ट पार्टी के राष्ट्रीय नेता थे।आमजन के हितों खातिर किसी भी स्तर पर जा सकते थे। विधायकों में हीरा थे,वैसा कोई विधायक आज तक नहीं हुआ है।यह विचार भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य कार्यकारिणी सदस्य महेंद्र राय ने गांधी भवन बाराबंकी में आयोजित स्मृति सभा में संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि बाबू रामचंद्र बक्श सिंह अच्छे वक्ता अधिवक्ता, अनुवादक भी थे। पार्टी के राज्य परिषद सदस्य रणधीरसिंह सुमन ने कहा कि 1974 में समाजवादी मंत्री को चुनाव हराकर विधायक हुए थे। समाजवादी पार्टी के गढ़ में भी रामचंद्र बाबू का कोई मुकाबला नही कर पाता था। अत्यंत मिलनसार थे,कोई उनके पास से निराश नहीं लौटता था।उनका सम्मान था।

जिला सचिव बृजमोहन वर्मा ने कहा कि रामचन्द्र बक्श सिंह प्रदेश के किसानों,मजदूरों की समस्याओं को हल कराने के आंदोलनकारी थे।राज्य परिषद सदस्य प्रवीण कुमार वर्मा ने कहा कि बाबूजी बाराबंकी के जननेता थे। शिवदर्शन वर्मा ने कहा कि कम्युनिस्ट पार्टी के दिग्गज नेता रामचन्द्रबक्श सिंह जन समस्याओं को हल करने में आगे थे। बिजली कर्मचारियों के नेता केएस रावत ने कहा कि रामचन्द्र बक्श सिंह जैसे विधायकों की आवश्यकता है। गांधी भवन के संस्थापक पंडित राजनाथ शर्मा ने भी श्रद्धांजलि दी।

स्ट्रीट डॉग्स के समर्थन में प्रदर्शन, नारा लगाया-नो डॉग्स, नो वोट

संवाददाता

लखनऊ। राजधानी में रविवार को पशु प्रेमियों ने इको गार्डन में प्रदर्शन किया। ह्यूमन चेन बनाकर डॉग्स के प्रति एकता का संदेश दिया। आगामी 7 जनवरी को सुप्रीम कोर्ट में स्ट्रीट डॉग्स को लेकर होने वाली सुनवाई में अपनी मांगें मंगवाने के लिए लोग इकट्ठा हुए। विभिन्न संस्थाओं से जुड़े सदस्य, सामाजिक कार्यकर्ता, छात्र और आम नागरिक शामिल हुए। इस दौरान स्ट्रीट डॉग के समर्थन में लिखे हुए स्लोगन और नारे वाली तख्ती लेकर नारेबाजी की। हिस्ट्री डॉग्स को लेकर सुप्रीम कोर्ट के दिए गए फैसले का विरोध किया। सुप्रीम कोर्ट ऑर्डर रद्द करो, नो डॉग्स, नो वोट, आवारा नहीं हमारा है जैसे नारे लगाए। प्रदर्शनकारियों ने कहा सुप्रीम कोर्ट का स्ट्रीट डॉग को लेकर दिया गया आदेश बेहद अफसोसजनक है। हम लोग इस विरोध प्रदर्शन के माध्यम से बेजुबानों की आवाज बने हैं जो अपना दर्द कह नहीं सकते। सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के बाद विभिन्न शहरों में नगर निकाय की ओर से स्ट्रीट डॉग्स के साथ क्रूरता की जा रही है। अगर कहीं किसी घटना में एक स्ट्रीट डॉग बाइट कर लेता है तो वह सबको दिखता है। मगर हर दिन जो डॉग्स के साथ क्रूरता होती है वह नजर क्यों नहीं आता? प्रदर्शन कर रहीं राखी किशोर ने कहा प्रदर्शन करना उद्देश्य नहीं है बल्कि हम समस्या का समाधान चाहते हैं। सर्वोच्च न्यायालय से गली के कुत्तों को स्थायी आश्रय देने संबंधी आदेश को वापस लेने की मांग है। एबीसी नियम 2001, के अनुसार पशु जन्म नियंत्रण कार्यक्रमों के लिए धन और दक्षता बढ़ाई जाए। रेबीज टीकाकरण को 100: सुरक्षित करने के लिए व्यापक अभियान चलाया जाए। स्ट्रीट डॉग्स के साथ सकारात्मक रवैया अपनाना चाहिए। हम लोगों ने पिछला आदेश आने के बाद पत्र लिखे पूरे भारत से 10 लाख से अधिक पत्र सुप्रीम कोर्ट को लिखे जा चुके हैं। प्रदर्शन में शामिल डॉक्टर विशाखा ने कहा ये फैसला तानाशाही वाला है। जो चीज आपको नहीं चाहिए उसके खिलाफ फैसला दे दो यह मानवता और न्याय बिल्कुल भी नहीं है। यह फैसला पूरी तरीके से गलत है। इन बेजुबान जानवरों के साथ गलत हो रहा है इसलिए हम एक होकर प्रदर्शन कर रहे हैं। डॉग बाइट्स की वजह से आप इस तरीके का फैसला नहीं दे सकते।

छत्तीसगढ़ की लोक नृत्य एवं लोक कला पर आधारित फोटो प्रदर्शनी का सफल समापन हुआ

छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत को समझने और अनुभव करने का एक महत्वपूर्ण अवसर

बीएनई

रायपुर। छायाचित्रों के माध्यम से छत्तीसगढ़ के लोक जीवन, सांस्कृतिक विविधता एवं परंपराओं के संरक्षण का सशक्त संदेश देने वाली लोक नृत्य एवं लोक कला पर आधारित फोटो

प्रदर्शनी का सफल समापन हुआ। समापन अवसर पर प्रबल प्रताप सिंह जूदेव, उपाध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने प्रदर्शनी की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए इसे छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत को सहेजने का सराहनीय प्रयास बताया तथा इस प्रकार के आयोजनों के लिए क्लाउड के निरंतर प्रयासों की सराहना करते हुए प्रोत्साहित किया। छत्तीसगढ़ कला, संस्कृति और परंपराओं की समृद्ध भूमि है, जहाँ तीज–त्योहार, लोक–नृत्य और पारंपरिक कलाएँ आज भी उसी उत्साह और गरिमा के साथ संरक्षित हैं। छत्तीसगढ़ की पारंपरिक लोक–कला एक से बढ़कर है। गौरा–गौरी, भोजली, राउत नाचा, सुआ नृत्य, पंथी और करमा नृत्य जैसी लोक–शैली के साथ बांस शिल्प, मृदा शिल्प और टेराकोटा के साथ ही आयरन और मेटल शिल्प से संबंधित फोटो प्रदर्शनी से विस्तृत जानकारी मिल रही है। छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोक–संस्कृति, पारंपरिक नृत्यों एवं विविध लोक कलाओं को जन–जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से क्लाउड एवं संस्कृति विभाग, छत्तीसगढ़ के सहयोग से आयोजित इस विशेष फोटो प्रदर्शनी ने राज्य की जनजातीय, ग्रामीण एवं लोक परंपराओं को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत किया, जिससे छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान और अधिक सुदृढ़ हुई। प्रदर्शनी के दौरान केरल, तेलंगाना, महाराष्ट्र, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, झारखंड, बिहार सहित ऑस्ट्रेलिया से भी बड़ी संख्या में दर्शक पहुंचे। विशेष रूप से युवा वर्ग एवं स्कूली विद्यार्थियों में छत्तीसगढ़ की लोक कला एवं संस्कृति को लेकर विशेष उत्साह देखने को मिला। आगंतुकों ने लोक नृत्य परंपराओं और कलात्मक विरासत की मुक्त

कंठ से प्रशंसा की। इस फोटो प्रदर्शनी में दीपेंद्र दीवान, अखिलेश भरोस, धनेश्वर साहू, हर्षा सिंदूर एवं शौर्य दीवान के छायाचित्र प्रदर्शित किए, जिन्हें दर्शकों से भरपूर सराहना प्राप्त हुई। आयोजनकर्ता दीपेंद्र दीवान ने कहा कि ऐसे सांस्कृतिक आयोजन निरंतर होते रहना चाहिए, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ छत्तीसगढ़ की समृद्ध संस्कृति और परंपराओं से जुड़े रह सकें। यह आयोजन विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं, संस्कृति अध्येताओं एवं आम नागरिकों के लिए छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत को समझने और अनुभव करने का एक महत्वपूर्ण अवसर सिद्ध हुआ। समापन अवसर पर अनेक गणमान्य नागरिक एवं कला प्रेमी उपस्थित रहे।

अंगदान के इंतजार में हरियाणा के 1984 मरीज : चार साल में 215 की हो चुकी है मौत, जागरूकता की कमी बनी बड़ी बाधा

एजेंसी

चंडीगढ़। अंगदान में जागरूकता की कमी सबसे बड़ी बाधा बन रही है। कई भ्रांतिया होने के कारण लोग अंगदान से हिचकते हैं, जिसका नतीजा है कि कई मरीज अंगों के इंतजार में ही दम तोड़ देते हैं। केंद्र सरकार के मुताबिक हरियाणा में 1984 मरीज अंगदान के इंतजार में हैं। इसमें 1042 किडनी ट्रांसप्लांट, 879 लिवर, 42 हार्ट, 20 लंग्स और एक मरीज पैनक्रियाज के इंतजार में हैं। यह सभी वेटिंग लिस्ट में हैं और अंगदान का इंतजार कर रहे हैं। ट्रांसप्लांट से जुड़े विशेषज्ञ बताते हैं कि यह आंकड़ा तो आधिकारिक है। इससे कहीं ज्यादा लोगों के नाम आधिकारिक सूची में नहीं है। पीजीआई रोटो (क्षेत्रीय अंग एवं ऊतक प्रत्यारोपण संगठन) की सलाहकार सरयू बताती हैं कि अंगदान के प्रति लोगों में जागरूकता की भारी कमी है। आईसीयू में मरीज के ब्रेन डेड के बाद जब परिजनों से अंगदान की सहमति मांगी जाती हैं तो वे इंकार कर देते हैं। यदि पहले से उनमें जागरूकता हो तो दिक्कतें नहीं आती हैं। यमुनानगर व अंबाला के कई परिजनों ने अपने मरीजों के अंगदान दिए हैं, इससे एक नहीं कई

मरीजों को नई जिंदगी मिली है। हरियाणा में 2020 से 2024 के बीच करीब 215 ऐसे मरीज हैं, जिनकी मृत्यु अंगदान के इंतजार में रह गई थी। वहीं, पड़ोसी राज्य में पंजाब में स्थिति बेहतर है। पंजाब में इन चार साल में सिर्फ पांच मरीजों की मौत हुई है। हालांकि पंजाब में भी 2652 मरीज भी अंगदान के इंतजार में हैं। हरियाणा में सिर्फ तीन अस्पताल में ट्रांसप्लांट की सुविधा अंगदान के अलावा ट्रांसप्लांट के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर भी काफी महत्वपूर्ण होता है। हरियाणा में सिर्फ तीन ही अस्पताल ऐसे हैं, जहां ट्रांसप्लांट की सुविधा उपलब्ध है। इसमें एक रोहतक पीजीआई, दूसरा पंचकूला का कमांड अस्पताल और तीसरा पंचकूला का निजी अस्पताल अल्केमिस्ट है। हरियाणा में चार साल में 1765 कुल ट्रांसप्लांट हुए। इनमें 1254 किडनी और 511 लिवर के ट्रांसप्लांट हुए हैं। वहीं, हृदय, लंग्स व पेक्रियाज का एक भी ट्रांसप्लांट हरियाणा में नहीं हुआ है। इसके अलावा 3727 कोर्निया ट्रांसप्लांट भी हुए हैं। उधर, ट्रांसप्लांट की सुविधा में पड़ोसी राज्य में ज्यादा बेहतर है। पंजाब में इस समयवधि के दौरान कुल 2497 ट्रांसप्लांट किए गए। इनमें दो हार्ट ट्रांसप्लांट भी शामिल हैं।

ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेटर डेमियन मार्टिन की सेहत में हो रहा सुधार, परिवार ने दी जानकारी

एजेंसी

ब्रिसबेन। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेटर डेमियन मार्टिन के परिवार के हवाले से आई एक रिपोर्ट के अनुसार, उनकी सेहत में सुधार हो रहा है। मार्टिन को हाल ही में दिमागी बुखार (मेनिन्जाइटिस) का पता चलने के बाद गोल्ड कोस्ट के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया था। दाएं हाथ के 54 साल के इस पूर्व बल्लेबाज ने 67 टेस्ट मैच खेले। वह अस्पताल में कोमा में थे। रिपोर्ट के अनुसार, अस्पताल में भर्ती होने के बाद अपने पहले बयान में क्रिकेटर के परिवार ने कहा , डेमियन की सेहत में तेजी से सुधार हो रहा है। मेनिन्जाइटिस के कारण अस्पताल में भर्ती होने के बाद इस पूर्व खिलाड़ी के परिवार ने अपने पहले सार्वजनिक बयान में गोल्ड कोस्ट यूनिवर्सिटी अस्पताल के कर्मचारियों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की है। मार्टिन का करियर डार्विन में जन्मे मार्टिन ने वेस्टइंडीज के खिलाफ 1992–93 की सीरीज में टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण किया था। उन्होंने आखिरी टेस्ट एशेज 2006–07 में खेला जिसके बाद वह कमेंट्री करने लगे।

वेनेजुएला पर हुए अमेरिकी हमले पर ऑल इंडिया पीपुल्स फ्रंट का वक्तव्य

बीएनई

वेनेजुएला। वेनेजुएला के राष्ट्रपति और उनकी पत्नी को देर रात उनके घर से अमेरिकी कमांडो द्वारा गिरफ्तार करने और वेनेजुएला पर ट्रंप सरकार द्वारा हमले और कब्जे के विरुद्ध पूरी दुनिया में हो रहे विरोध के साथ ऑल इंडिया पीपुल्स फ्रंट एकजुटता जाहिर करता है। एआईपीएफ की राष्ट्रीय कार्य समिति ने वेनेजुएला की सम्प्रभुता पर किए इस हमले की कड़ी निंदा की है। राष्ट्रीय कार्य समिति ने लिए प्रस्ताव में कहा कि किसी स्वतंत्र देश पर हमला, उसकी चुनी हुई सरकार को हटाना और उसके प्राकृतिक संसाधनों पर कब्जा करने की कोशिश अंतरराष्ट्रीय कानून, संयुक्त राष्ट्र संघ चार्टर और लोकतांत्रिक मूल्यों का खुला उल्लंघन है। वेनेजुएला पर हमले के मामले पर यह तथ्य है कि ट्रंप प्रशासन ने अमेरिका के संवैधानिक प्रावधानों का भी खुला उल्लंघन किया है। हमले के संदर्भ में अमेरिकी कांग्रेस से मंजूरी लेना तो दूर की बात है ट्रंप ने कांग्रेस को सूचना तक नहीं दी। दुनिया में पेट्रोडॉलर का वर्चस्व बनाए रखने के लिए ट्रंप प्रशासन ने यह हताशापूर्ण गैर पारंपरिक कार्रवाई की है। लेकिन इस तरह की गई कार्रवाईयों से पेट्रोडॉलर के वर्चस्व को बनाए रखना अब अमेरिका के लिए संभव नही है। उलटे दुनियाभर में इस तरह की कार्रवाई अशांति और अस्थिरता ही पैदा करेगी। एआईपीएफ ने प्रस्ताव में कहा कि वेनेजुएला का अपराध महज इतना था कि उसने अपने प्राकृतिक संसाधनों पर अपने लोगों का अधिकार स्थापित करने की कोशिश की और तेल क्षेत्र को अमेरिकी कंपनियों से मुक्त करने की कोशिश की थी। वेनेजुएला ने अंतरराष्ट्रीय बाजार में अमेरिकी डॉलर के एकाधिकार को चुनौती दी। अमेरिका का यह कहना कि वेनेजुएला के राष्ट्रपति मादुरो ड्रग्स व्यापार में लिप्त थे और विरोधियों की लोकतांत्रिक गतिविधियों पर हमला कर रहे थे, इसलिए उसने वेनेजुएला पर हमला किया, पूरी तौर पर पाखंड है। अमेरिका दुनिया भर में तानाशाही की सरकारों का समर्थन करता है और प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष ढंग से ग्लोबल साउथ के देशों के संसाधनों पर कब्जा करता आ रहा है। एआईपीएफ एनडीए की केंद्र सरकार से यह मांग करता है कि ट्रंप प्रशासन द्वारा वेनेजुएला पर कब्जा करने के खिलाफ वह अपना विरोध दर्ज कराए। क्योंकि यह हमला ग्लोबल साउथ के सभी देशों के आत्मनिर्णय के अधिकार पर हमला है। इसी तरह के हमले पहले भी अमेरिका इराक, लीबिया आदि देशों में बहाने बनाकर करता रहा है।

कांगेर घाटी में मिली अनोखी "ग्रीन गुफा"

जल्द खुलेंगे पर्यटन के नए द्वार

बीएनई

रायपुर। छत्तीसगढ़ की कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान अपनी अद्भुत प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध जैव विविधता और विश्व–प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों के लिए देश–विदेश में विख्यात है। इसी कड़ी में अब कांगेर घाटी में एक और अनोखी प्राकृतिक स्थलाकृति सामने आई है, जिसे "ग्रीन केव" (ग्रीन गुफा) नाम दिया गया है। गौरतलब है कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व और वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री केदार कश्यप के निर्देशानुसार राज्य सरकार द्वारा पर्यटन और वन्य धरोहरों के संरक्षण एवं संवर्धन को विशेष प्राथमिकता दी जा रही है। वन मंत्री कश्यप ने स्पष्ट किया है कि ग्रीन गुफा के पर्यटन मानचित्र में शामिल होने से कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान में पर्यटन को नया आयाम मिलेगा, जिससे स्थानीय रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और क्षेत्रीय विकास को गति प्राप्त होगी और शीघ्र ही पर्यटक इस अद्भुत गुफा की प्राकृतिक खूबसूरती का प्रत्यक्ष अनुभव कर सकेंगे। वन विभाग द्वारा आवश्यक तैयारियां पूर्ण किए जाने के बाद शीघ्र ही इस गुफा को पर्यटकों के लिए खोले जाने की योजना है। उल्लेखनीय है कि यह ग्रीन गुफा कोटुमसर परिसर के कंपार्टमेंट क्रमांक 85 में स्थित है। गुफा की दीवारों और छत से लटकती चूने की आकृतियों (स्टैलेक्टाइट्स) पर हरे रंग की सूक्ष्मजीवी परतें पाई जाती हैं, जिसके कारण इसे "ग्रीन केव" नाम दिया गया है। चूना पत्थर और शैल से निर्मित यह गुफा कांगेर घाटी की दुर्लभ और विशिष्ट गुफाओं में से एक मानी जा रही है। ग्रीन गुफा तक पहुंचने का मार्ग बड़े–बड़े पत्थरों से होकर गुजरता है। गुफा में प्रवेश करते ही सूक्ष्मजीवी जमाव से ढकी हरी दीवारें पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। आगे बढ़ने पर एक विशाल कक्ष दिखाई देता है, जहां से भीतर की ओर चमकदार और विशाल स्टैलेक्टाइट्स तथा फ्लो–स्टोन (बहते पानी से बनी पत्थर की परतें) देखने को मिलती हैं, जो गुफा की

प्राकृतिक भव्यता को और भी बढ़ा देती हैं। घने जंगलों के मध्य स्थित यह गुफा अपनी अनोखी संरचना और प्राकृतिक सौंदर्य के कारण पर्यटकों के लिए एक नया आकर्षण केंद्र बनने जा रही है। वन विभाग द्वारा गुफा की सुरक्षा एवं नियमित निगरानी की जा रही है। साथ ही पर्यटकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए पहुंच मार्ग, पैदल पथ तथा अन्य आवश्यक आधारभूत संरचनाओं का विकास कार्य प्रगति पर है। वन विभाग द्वारा कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान के पर्यटन विकास के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। इस पहल में प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वनबल प्रमुख व्ही. श्रीनिवासन तथा प्रमुख मुख्य वन संरक्षक (वन्य प्राणी) अरुण पांडे का मार्गदर्शन भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

ग्रोक से अवैध कंटेंट बनाने वालों पर होगी कार्रवाई, एआई से जुड़े विवाद पर एलन मस्क

एजेंसी

नई दिल्ली। माइक्रोब्लॉगिंग प्लेटफॉर्म एक्स के मालिक एलन मस्क ने साफ कहा है कि जो लोग एक्स के एआई टूल ग्रोक का इस्तेमाल करके अवैध, अश्लील या गैरकानूनी कंटेंट बनाएंगे, उनके खिलाफ वही कार्रवाई होगी, जो ऐसा कंटेंट अपलोड करने वालों पर होती है। यह बयान ऐसे समय आया है, जब भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (डमपजल) ने एक्स को निर्देश दिया है कि वह ग्रोक से बने सभी अश्लील, आपत्तिजनक और गैरकानूनी कंटेंट को तुरंत हटाए। ऐसा न करने पर कानून के तहत कार्रवाई की चेतावनी दी गई है। ग्रोक को दोष देना ठीक नहीं– मस्क एलन मस्क ने एक्स पर एक पोस्ट के जवाब में कहा कि ग्रोक को दोष देना ठीक नहीं है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि जैसे कोई पेन अपने आप गलत बात नहीं लिखता, वैसे ही ग्रोक भी अपने

आप गलत कंटेंट नहीं बनाता। यह पूरी तरह यूजर पर निर्भर करता है कि वह क्या इनपुट देता है। इसलिए जिम्मेदारी यूजर की ही होगी। राज्यसभा सांसद ने केंद्रीय मंत्री से की थी शिकायत मंत्रालय ने एक्स को 72 घंटे के भीतर यह बताने को कहा है कि उसने अब तक क्या कार्रवाई की है। मंत्रालय का कहना है कि उसे कई बार शिकायतें मिली हैं कि एक्स पर कुछ कंटेंट कानून के मुताबिक शालीनता और मर्यादा के नियमों का उल्लंघन कर रहा है। यह मामला तब और गंभीर हुआ, जब राज्यसभा सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव को पत्र लिखकर महिलाओं की फर्जी और अश्लील तस्वीरें बनाने के लिए ग्रोक के दुरुपयोग पर चिंता जताई। सरकार का कहना है कि ग्रोक का गलत इस्तेमाल कर कुछ लोग महिलाओं की छवि खराब करने वाले वीडियो और तस्वीरें बना रहे हैं, जो कानूनन अपराध है।

एशियाड के लिए 100 मीटर में राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ना जरूरी, एएफआई ने क्वालिफाइंग मानक जारी किया

एजेंसी, नई दिल्ली। भारतीय एथलेटिक्स महासंघ (एएफआई) ने जापान में 19 सितंबर से 4 अक्तूबर तक होने वाले 20वें एशियाई खेलों (एशियाड) के लिए क्वालिफाइंग मानक घोषित कर दिए। इस बार पुरुषों की 100 मीटर दौड़ और पोल वॉल्ट में चयन के लिए राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ना जरूरी होगा। चयन समिति के चेयरमैन आदिल सुमारीवाला ने कहा, मिश्रित 4•100 मीटर रिले और मैराथन वॉक जैसे नए इवेंट्स के लिए मानक बाद में तय होंगे। इसका फैसला एशियाई रिले और वर्ल्ड रिले के बाद लिया जाएगा। खिलाड़ियों को राज्य चौंपियनशिप में भाग लेना अनिवार्य होगा और कुल तीन प्रतियोगिताओं (दो अंतर–राज्य, राष्ट्रीय ओपन) में हिस्सा लेना जरूरी है। कम से कम दो प्रतियोगिताओं में मानक के करीब प्रदर्शन और अंतिम इवेंट में मानक हासिल करना अनिवार्य है।

इंडियन सुपर लीग सत्र को लेकर अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ का एलान, अगले सप्ताह घोषित होगी तारीख

एजेंसी

नई दिल्ली। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) ने कहा है कि इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) के 2025–26 सत्र की शुरुआत की तारीख अगले सप्ताह घोषित की जाएगी। यह घोषणा उस समन्वय समिति की रिपोर्ट सौंपे जाने के बाद की जाएगी जिसे इस मामले की समीक्षा के लिए गठित किया गया था। एआईएफएफ ने शनिवार को आपात समिति की बैठक के बाद कहा कि शीर्ष स्तरीय लीग का आयोजन किया जाएगा, हालांकि क्लबों ने पहले कुछ मुद्दे उठाए थे। यह भी पता चला है कि एआईएफएफ आईएसएल की शुरुआत 15 फरवरी से करने का प्रस्ताव रख सकता है। 2025–26 सत्र में देरी पूर्व व्यावसायिक अधिकार धारक एफएसडीएल के साथ मास्टर राइट्स एग्रीमेंट (एमआरए) आठ दिसंबर को समाप्त होने के कारण हुई। एआईएफएफ ने एक बयान में कहा, एआईएफएफ की आपात समिति ने एआईएफएफ–आईएसएल समन्वय समिति द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट पर विचार किया और उसे संज्ञान में लिया। समन्वय समिति से अनुरोध किया गया था कि वह दो जनवरी 2025 तक अपनी रिपोर्ट एआईएफएफ सचिवालय को सौंप दे, जिसका विधिवत पालन किया गया।

बीसीसीआई ने कुछ गलत नहीं किया, मुस्तफिजुर को बाहर करने पर बोर्ड को मिला इस पूर्व कप्तान का समर्थन

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय टीम के पूर्व कप्तान मोहम्मद अजहरुद्दीन भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के समर्थन में उतरे हैं। अजहरुद्दीन ने बांग्लादेश के तेज गेंदबाज मुस्तफिजुर को आईपीएल से बाहर करने पर बोर्ड की सराहना की है। कई राजनेताओं ने पड़ोसी देश में हिंदुओं के खिलाफ हिंसा की बार–बार होने वाली घटनाओं का हवाला देते हुए टूर्नामेंट में बांग्लादेशी तेज गेंदबाज को शामिल किए जाने पर खुलकर अपनी नाराजगी व्यक्त की थी। केकेआर ने मुस्तफिजुर को दिखाया बाहर का रास्ता लगातार बढ़ रहे विवाद को देखते हुए बीसीसीआई ने आईपीएल फ्रेंचाइजी कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) को निर्देश दिया था कि वह मुस्तफिजुर को टीम से रिलीज कर दे जिसके बाद केकेआर ने मुस्तफिजुर को बाहर का रास्ता दिखाया था। केकेआर ने मुस्तफिजुर को आईपीएल नीलामी में 9.20 करोड़ रुपये में खरीदा था।

मोहम्मद अजहरुद्दीन ने बांग्लादेश में उत्पन्न दुखद स्थिति की निंदा की और बीसीसीआई की त्वरित प्रतिक्रिया की सराहना की। अजहरुद्दीन ने कहा, बोर्ड ने कुछ भी गलत नहीं किया है। बांग्लादेश में जो हो रहा है वह अच्छा नहीं है। लेकिन खेल जगत में मामला अलग है। हालांकि, बोर्ड ने जो भी फैसला लिया है, वह विदेश मंत्रालय और गृह मंत्रालय से सलाह मशवरा करने के बाद ही लिया होगा। भारत और बांग्लादेश आमने–सामने मुस्तफिजुर को आईपीएल से बाहर करने के बाद विवाद गहराता जा रहा है। बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) को उसके खेल मंत्रालय ने निर्देश दिया है कि वह टी20 विश्व कप के अपने लीग मैच भारत के बजाए श्रीलंका में खेलने की मांग करे। बांग्लादेश के खेल मंत्रालय का मानना है कि मुस्तफिजुर को बाहर करने के बाद खिलाड़ियों की सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई है। बांग्लादेश के अंतरिम सरकार के खेल मंत्री आसिफ नजरुल ने कहा कि उन्होंने बोर्ड को निर्देश दिया है कि वह जय शाह के नेतृत्व वाली आईसीसी से बांग्लादेश के चार लीग मैचों को श्रीलंका में स्थानांतरित करने के लिए कहे। बांग्लादेश को अपने चार लीग मैच में से तीन कोलकाता और एक मुंबई में खेलना है।

थलापति विजय की 'जन नायकन' से क्या घबरा गए शिवकार्तिकेयन ? फिल्म 'पराशक्ति' की रिलीज डेट को लेकर दिया अपडेट

एजेंसी

साउथ की अपकमिंग फिल्म श्पराशक्ति' का सामना जल्द ही थिएटर में थलापति विजय की 'जन नायकन' से होगा। हाल ही में श्पराशक्ति' के अभिनेता शिवकार्तिकेयन ने इस क्लैश को लेकर बातचीत की है। पोंगल पर पराशक्ति और 'जन नायकन' की टक्कर शिवकार्तिकेयन, रवि मोहन और श्रीलीला की फिल्म पराशक्ति को बॉक्स ऑफिस पर थलापति विजय की आखिरी फिल्म 'जन नायकन' से कड़ी टक्कर मिलने वाली है। यह दोनों फिल्में 9 जनवरी को रिलीज हो रही हैं। पोंगल जैसे त्योहार पर ये फिल्में सिनेमाघरों में अपनी किस्मत आजमाएंगी। लेकिन इन दिनों सोशल मीडिया पर 'जन नायकन' का ट्रेंड देखा जा रहा है। फैंस विजय की फिल्म को लेकर उत्सुक है। ऐसे में क्या शिवकार्तिकेयन अपनी फिल्म की रिलीज डेट को आगे बढ़ाएंगे। शिवकार्तिकेयन ने कहा– 'हैरान रह गया था' 'पराशक्ति' के प्री–रिलीज इवेंट पर शिवकार्तिकेयन ने थलापति विजय की फिल्म से होने वाली टक्कर पर बात की। उन्होंने अपनी फिल्म की रिलीज को लेकर भी अपडेट शेयर किया? उन्होंने कहा, 'जब मैंने देखा कि दोनों फिल्में पोंगल के मौके पर आ रही हैं तो हैरान रह गया था। लेकिन जैसा कि विजय सर का मानना है कि दोनों फिल्में पोंगल पर रिलीज हो रही हैं, ऐसे में एक–दूसरे पर असर नहीं डालेंगी।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक **धर्मेन्द्र सिंह** द्वारा शौर्य प्रिंटर्स, शिवपुरी कालोनी, निकट बांसमण्डी चौराहा, लखनऊ से मुद्रित तथा एमआईजी-47, सेक्टर-ई, अलीगंज, लखनऊ (उ.प्र.) से प्रकाशित
सम्पादक-अंजू सिंह (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा) Email-lkojunction@gmail.com. RNI NO.-UPHIN/2015/64743